Hindi
Sevenfold Glory of Jesus Christ
TCA-048SEV

यीशु मसीह की सात गुना महिमा

विलियम मेरियन ब्रन्हम

Hindi
Sevenfold Glory of Jesus Christ
TCA-048SEV

यीशु मसीह की सात गुना महिमा

विलियम मेरियन ब्रन्हम

परिचय

विलियम ब्रन्हम के द्वारा प्रचार किए गए १,१०० के ऊपर उपदेशों का ऑडियो और लिखित संस्करणे अनेक भाषाओं में डाउनलोड और छपने के लिए उपलब्ध है।

इस काम को अनुकृति और वितरण किया जा सकता है जब तक कि इसका पूरी तरह से अनुकृति होता है, बिना संशोधित किये हुए, और निःशुल्क से वितरण किया जाता है।

परिचय

विलियम ब्रन्हम के द्वारा प्रचार किए गए १,१०० के ऊपर उपदेशों का ऑडियो और लिखित संस्करणे अनेक भाषाओं में डाउनलोड और छपने के लिए उपलब्ध है।

इस काम को अनुकृति और वितरण किया जा सकता है जब तक कि इसका पूरी तरह से अनुकृति होता है, बिना संशोधित किये हुए, और निःशुल्क से वितरण किया जाता है।

यीशु मसीह की सात गुना महिमा

प्रकाशितवाक्य 1:10,

".... और अपने पीछे तुरही का सा बड़ा शब्द यह कहते सुना।"

यूहन्ना आत्मा में था, और जब वह आत्मा में था; तो उसने प्रभु यीशु का महान और अद्भुत दिन तथा उसकी समस्त पवित्र सामर्थ देखीं। भविष्य का खुलासा होने वाला था, क्योंकि परमेश्वर ही उसे इसके विषय में सिखाने जा रहा था। यूहन्ना ने यह नहीं कहा था, कि यह एक तुरही थी। यह तो एक तुरही जैसा ही था। अब जब एक तुरही फूंकी जाती है, तो उसके विषय में एक अति आवश्यक बात होती है। यह एक अध्यादेश जैसा होता है जिसे महाराजा का सन्देशवाहक लोगों के पास ला रहा होता है। वह तुरही फूँकता है। यह एक अति आवश्यक बुलाहट होती है। लोग सुनने के लिए एकत्र होते हैं। (इस्राएल हमेशा ही तुरही के शब्द के द्वारा ही इकट्ठा हुआ था) कोई महत्वपूर्ण घटना अति निकट होती है। "इस पर कान लगाओ।" अतः इस शब्द में तुरही के शब्द जैसा ही एक अत्यन्त आवश्यक सन्देश था। यह बहुत ही जबरदस्त और स्पष्ट था; सनसनीखेज और जगा उठानेवाला था। ओह, ताकि यह हो कि हम परमेश्वर की आवाज़ सुन सकें जबकि इस दिन में तुरही का सा शब्द होता है, क्योंकि यह "सुसमाचार की ही तुरही" ही है जो "वचन की भविष्यवाणी का शब्द" फूँक रही है, कि हमें उससे अवगत कराये और हमें उसके लिए तैयार करे जो पृथ्वी के ऊपर आने वाला है।

एक किताब में लिखो

प्रकाशितवाक्य 1:11,

"वह कहता है, कि मैं ही अल्फा और ओमिगा हूँ; प्रथम और अन्तिम हूँ और जो कुछ तू देखता है, उसे पुस्तक में लिख कर सात कलीसियाओं के पास भेज दे, जो आसिया** (एशिया) **में है; अर्थात् इफिसुस, और स्मुरना, और पिरगुमन, और थूआतीरा, और सरदीस, और फिलदिलफिया, और लौदीकिया में।"

यही तो बात है। वही प्रथम और अन्तिम है, अल्फा और ओमिगा है; वही सब कुछ है। वही एक सच्चा परमेश्वर है। वही परमेश्वर का वचन और आवाज है। वास्तविकता और सच्चाई हमारे सामने है। आत्मा में होना क्या ही बड़ी बात है। परमेश्वर की उपस्थिति में होना और उससे सुनना क्या ही शानदार बात है..... "जो कुछ तू देखता है उसे एक पुस्तक में लिख ले, और उसे सात कलीसियाओ के पास भेज दे।" वह शब्द जिसने अदन की वाटिका में और

यीशु मसीह की सात गुना महिमा

प्रकाशितवाक्य 1:10,

".... और अपने पीछे तुरही का सा बड़ा शब्द यह कहते सुना।"

यूहन्ना आत्मा में था, और जब वह आत्मा में था; तो उसने प्रभु यीशु का महान और अद्भुत दिन तथा उसकी समस्त पवित्र सामर्थ देखीं। भविष्य का खुलासा होने वाला था, क्योंकि परमेश्वर ही उसे इसके विषय में सिखाने जा रहा था। यूहन्ना ने यह नहीं कहा था, कि यह एक तुरही थी। यह तो एक तुरही जैसा ही था। अब जब एक तुरही फूंकी जाती है, तो उसके विषय में एक अति आवश्यक बात होती है। यह एक अध्यादेश जैसा होता है जिसे महाराजा का सन्देशवाहक लोगों के पास ला रहा होता है। वह तुरही फूँकता है। यह एक अति आवश्यक बुलाहट होती है। लोग सुनने के लिए एकत्र होते हैं। (इस्राएल हमेशा ही तुरही के शब्द के द्वारा ही इकट्ठा हुआ था) कोई महत्वपूर्ण घटना अति निकट होती है। "इस पर कान लगाओ।" अतः इस शब्द में तुरही के शब्द जैसा ही एक अत्यन्त आवश्यक सन्देश था। यह बहुत ही जबरदस्त और स्पष्ट था; सनसनीखेज और जगा उठानेवाला था। ओह, ताकि यह हो कि हम परमेश्वर की आवाज़ सुन सकें जबकि इस दिन में तुरही का सा शब्द होता है, क्योंकि यह "सुसमाचार की ही तुरही" ही है जो "वचन की भविष्यवाणी का शब्द" फूँक रही है, कि हमें उससे अवगत कराये और हमें उसके लिए तैयार करे जो पृथ्वी के ऊपर आने वाला है।

एक किताब में लिखो

प्रकाशितवाक्य 1:11,

"वह कहता है, कि मैं ही अल्फा और ओमिगा हूँ; प्रथम और अन्तिम हूँ और जो कुछ तू देखता है, उसे पुस्तक में लिख कर सात कलीसियाओं के पास भेज दे, जो आसिया** (एशिया) **में है; अर्थात् इफिसुस, और स्मुरना, और पिरगुमन, और थूआतीरा, और सरदीस, और फिलदिलफिया, और लौदीकिया में।"

यही तो बात है। वही प्रथम और अन्तिम है, अल्फा और ओमिगा है; वही सब कुछ है। वही एक सच्चा परमेश्वर है। वही परमेश्वर का वचन और आवाज है। वास्तविकता और सच्चाई हमारे सामने है। आत्मा में होना क्या ही बड़ी बात है। परमेश्वर की उपस्थिति में होना और उससे सुनना क्या ही शानदार बात है..... "जो कुछ तू देखता है उसे एक पुस्तक में लिख ले, और उसे सात कलीसियाओ के पास भेज दे।" वह शब्द जिसने अदन की वाटिका में और

सीनै पर्वत पर अपना वचन बोला था, जो शब्द रूपान्तरण वाले पर्वत पर भी जबरदस्त तेज में सुनायी दिया था, एक बार फिर से अपनी आवाज कर रहा था; और इस बार यह शब्द यीशु मसीह के सम्पूर्ण और अन्तिम प्रकाशन सहित सात कलीसियाओ के लिए हो रहा था।

"यूहन्ना, इन दर्शनों को लिख डाल। इसे उन कालों के लिए जो आने वाले हैं एक लेखा-जोखा बना डाल, क्योंकि ये वे सच्ची भविष्यवाणियाँ हैं जो अवश्य ही घटित होनी चाहियें। उन्हें कलमबद्ध कर ले और उन्हें बाहर भेज दे, उन्हें अवगत करा डाल।' "

यूहन्ना ने उस शब्द को पहचान लिया था। ओह, यदि आप उसके निज जन हैं, तो आप उस शब्द को पहचान जायेंगे जब वह आपको बुलाता है।

सात सोने के दीवट

प्रकाशितवाक्य 1:12,

"और मैंने उस शब्द को जो मुझ से बोल रहा था, देखने के लिये अपना मुँह फेरा और पीछे घुमकर मैंने सोने की सात दीवटें देखीं।"

यूहन्ना यह नहीं कहता है, कि वह उसको जिसका कि वह शब्द सुनता था देखने के लिए पीछे मुड़ा, लेकिन वह तो शब्द को ही देखने के लिए मुड़ा था। ओह, मुझे यह अच्छा लगता है। वह उस शब्द को देखने के लिए ही मुड़ा था। वह शब्द और वह व्यक्ति एक और केवल एक ही हैं। यीशु ही वचन है। यूहन्ना 1:1-3,

"आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।

यही आदि में परमेश्वर के साथ था।

सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।"

यदि आप कभी इस स्थिति तक पहुँच सकते हैं, कि आप सचमुच में वचन को देख लें,तो आप यीशु को ही देख रहे होंगे।

जब यूहन्ना मुड़ा तो उसने सोने की सात दीवटें देखीं। सचमुच में तो वे चिरागदान ही थे। और बीस वें पद के अनुसार तो वे सात कलीसियाऐं हैं। "ये सात दीवटें (चिरागदान) जो तू देखता है सात कलीसियाएं हैं।" कलीसियाओं को प्रदर्शित करने के लिए वे बामुश्किल दीवटें ही हो सकती थीं। एक दीवट

रहे हैं।

परन्तु इस अध्याय पर एक अन्तिम समापन दृष्टि डालते हुए हम उसपर दृष्टि करें; जबकि वह वहाँ पर अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिये हुए सात सोने की दीवटों के बीच खड़ा हुआ है। इस प्रकार उसे उसके परमेश्वर वाले सर्वोच्च स्वरूप में देखना सांस रोक देनेवाली बात है। वह न्यायाधीश, महायाजक, महाराजा, महा उकाब, मेमना, सिंह, अल्फा, ओमिगा, आदि और अन्त, पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा, वह जो था, वह जो है, वह जो आनेवाला है, सर्वशक्तिमान, **सब में सब कुछ** है। वही एक है जो रचियेता और समापन करनेवाला है। वह मेमना ही योग्य है! उसने हमारे उद्धार को अपने निज लोह से खरीद कर अपनी योग्यता साबित की है। अब वह अपनी सारी सामर्थ और अपनी सारी महिमा के साथ खड़ा हुआ है, और उसे सब कुछ एक न्यायाधीश के रूप में सौंप दिया गया है।

जी हाँ, वहाँ वह उन तारों को अपने हाथ में लिये हुए चिरागदानों के बीच खड़ा हुआ है। यह रात ही होती है जब हम उजियाले के लिए चिरागदानों का उपयोग करते हैं, और ऐसा तभी होता है जब तारे चमकते हुए होते हैं, और सूर्य के उजियाले को प्रतिबिम्बित कर रहे होते हैं। और तब अन्धियारा होता है। कलीसिया विश्वास के द्वारा ही अन्धियारे में चल रही है। उसका प्रभु इस पृथ्वी से जा चुका है, लेकिन पवित्र आत्मा अभी भी कलीसिया के द्वारा उजियाला कर रहा है, इस पापमय स्थापित जगत को उजियाला दे रहा है। और वे तारे भी उसी का ही उजियाला फैलाते हैं। एक मात्र उजियाला जो उनके पास है वह उसी का ही है। यह जगत कितना अन्धिकारमय है... यह आत्मिक रूप से कितना ठंडा है। फिर भी जब यह इसके मध्य में आता है तो उजियाला और गरमाहट हो जाती है, और कलीसिया सामर्थ से भर जाती है, और उसी के द्वारा उन कामों को करती है जोकि उसने किये थे।

ओह, काश हम यूहन्ना के जैसे ही उसकी एक झलक देख पाते। उस दिन जब हम उसके सामने खड़े होते हैं, तो हमें किस प्रकार का मनुष्य होना चाहिये!

यदि आप ने पहले ही उसे अपना जीवन अर्पित नहीं किया है, तो यह हो कि आप इसी क्षण अपना हृदय परमेश्वर की ओर फेरें, और ठीक वहीं पर ही घुटने हो जायें जहाँ कि आप हैं, और आप अपने पापों के लिए उस से क्षमा माँगें, और अपना जीवन उसे समर्पित कर डालें। तब हम एक साथ मिल कर सात कलीसियायी कालों का अध्ययन करने का प्रयास करेंगे; और जब कि हम ऐसा करते हैं, मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर इस अयोग्य सेवक की आप के ऊपर वचन को प्रकट करने में सहायता करेगा।

2 www.messagehub.info

सीनै पर्वत पर अपना वचन बोला था, जो शब्द रूपान्तरण वाले पर्वत पर भी जबरदस्त तेज में सुनायी दिया था, एक बार फिर से अपनी आवाज कर रहा था; और इस बार यह शब्द यीशु मसीह के सम्पूर्ण और अन्तिम प्रकाशन सहित सात कलीसियाओ के लिए हो रहा था।

"यूहन्ना, इन दर्शनों को लिख डाल। इसे उन कालों के लिए जो आने वाले हैं एक लेखा-जोखा बना डाल, क्योंकि ये वे सच्ची भविष्यवाणियाँ हैं जो अवश्य ही घटित होनी चाहियें। उन्हें कलमबद्ध कर ले और उन्हें बाहर भेज दे, उन्हें अवगत करा डाल।' "

यूहन्ना ने उस शब्द को पहचान लिया था। ओह, यदि आप उसके निज जन हैं, तो आप उस शब्द को पहचान जायेंगे जब वह आपको बुलाता है।

सात सोने के दीवट

प्रकाशितवाक्य 1:12,

"और मैंने उस शब्द को जो मुझ से बोल रहा था, देखने के लिये अपना मुँह फेरा और पीछे घुमकर मैंने सोने की सात दीवटें देखीं।"

यूहन्ना यह नहीं कहता है, कि वह उसको जिसका कि वह शब्द सुनता था देखने के लिए पीछे मुड़ा, लेकिन वह तो शब्द को ही देखने के लिए मुड़ा था। ओह, मुझे यह अच्छा लगता है। वह उस शब्द को देखने के लिए ही मुड़ा था। वह शब्द और वह व्यक्ति एक और केवल एक ही हैं। यीशु ही वचन है। यूहन्ना 1:1-3,

"आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।

यही आदि में परमेश्वर के साथ था।

सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।"

यदि आप कभी इस स्थिति तक पहुँच सकते हैं, कि आप सचमुच में वचन को देख लें,तो आप यीशु को ही देख रहे होंगे।

जब यूहन्ना मुड़ा तो उसने सोने की सात दीवटें देखीं। सचमुच में तो वे चिरागदान ही थे। और बीस वें पद के अनुसार तो वे सात कलीसियाऐं हैं। "ये सात दीवटें (चिरागदान) जो तू देखता है सात कलीसियाएं हैं।" कलीसियाओं को प्रदर्शित करने के लिए वे बामुश्किल दीवटें ही हो सकती थीं। एक दीवट

यीशु मसीह की सात गुना महिमा 23

रहे हैं।

परन्तु इस अध्याय पर एक अन्तिम समापन दृष्टि डालते हुए हम उसपर दृष्टि करें; जबकि वह वहाँ पर अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिये हुए सात सोने की दीवटों के बीच खड़ा हुआ है। इस प्रकार उसे उसके परमेश्वर वाले सर्वोच्च स्वरूप में देखना सांस रोक देनेवाली बात है। वह न्यायाधीश, महायाजक, महाराजा, महा उकाब, मेमना, सिंह, अल्फा, ओमिगा, आदि और अन्त, पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा, वह जो था, वह जो है, वह जो आनेवाला है, सर्वशक्तिमान, **सब में सब कुछ** है। वही एक है जो रचियेता और समापन करनेवाला है। वह मेमना ही योग्य है! उसने हमारे उद्धार को अपने निज लोह से खरीद कर अपनी योग्यता साबित की है। अब वह अपनी सारी सामर्थ और अपनी सारी महिमा के साथ खड़ा हुआ है, और उसे सब कुछ एक न्यायाधीश के रूप में सौंप दिया गया है।

जी हाँ, वहाँ वह उन तारों को अपने हाथ में लिये हुए चिरागदानों के बीच खड़ा हुआ है। यह रात ही होती है जब हम उजियाले के लिए चिरागदानों का उपयोग करते हैं, और ऐसा तभी होता है जब तारे चमकते हुए होते हैं, और सूर्य के उजियाले को प्रतिबिम्बित कर रहे होते हैं। और तब अन्धियारा होता है। कलीसिया विश्वास के द्वारा ही अन्धियारे में चल रही है। उसका प्रभु इस पृथ्वी से जा चुका है, लेकिन पवित्र आत्मा अभी भी कलीसिया के द्वारा उजियाला कर रहा है, इस पापमय स्थापित जगत को उजियाला दे रहा है। और वे तारे भी उसी का ही उजियाला फैलाते हैं। एक मात्र उजियाला जो उनके पास है वह उसी का ही है। यह जगत कितना अन्धिकारमय है... यह आत्मिक रूप से कितना ठंडा है। फिर भी जब यह इसके मध्य में आता है तो उजियाला और गरमाहट हो जाती है, और कलीसिया सामर्थ से भर जाती है, और उसी के द्वारा उन कामों को करती है जोकि उसने किये थे।

ओह, काश हम यूहन्ना के जैसे ही उसकी एक झलक देख पाते। उस दिन जब हम उसके सामने खड़े होते हैं, तो हमें किस प्रकार का मनुष्य होना चाहिये!

यदि आप ने पहले ही उसे अपना जीवन अर्पित नहीं किया है, तो यह हो कि आप इसी क्षण अपना हृदय परमेश्वर की ओर फेरें, और ठीक वहीं पर ही घुटने हो जायें जहाँ कि आप हैं, और आप अपने पापों के लिए उस से क्षमा माँगें, और अपना जीवन उसे समर्पित कर डालें। तब हम एक साथ मिल कर सात कलीसियायी कालों का अध्ययन करने का प्रयास करेंगे; और जब कि हम ऐसा करते हैं, मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर इस अयोग्य सेवक की आप के ऊपर वचन को प्रकट करने में सहायता करेगा।

हो चुका है। यही कारण है, कि अब दण्ड की कोई आज्ञा नहीं है। कलीसिया को क्योंकर डरना चाहिये? कौन सी प्रतिज्ञा है जिसे वह हमारे समक्ष साक्षात् प्रकट करने में कभी विफल हुआ हो? अब यह दण्ड़ या मृत्यु से क्यों भयभीत हो? इस सब पर तो जय प्राप्त की जा चुकी है। यहाँ वह महा शक्तिशाली विजेता है। यहाँ वह है जिसने देखे और अनदेखे दोनों ही जगतों पर विजय पायी है। उसने सिकन्दर की तरह विजय नहीं पायी है, जिसने तैंतीस वर्ष की आयु में संसार को जीत तो लिया था और आगे क्या जीतना है उसे यह पता नहीं था; अत: वह पाप और बलवाई जीवन का शिकार होकर मरा। उसने नैपोलियन की तरह से विजय नहीं पायी, जिसने सारे यूरोप को तो जीत लिया था, पर अन्त में वह वॉटरलू पर पराजित हुआ, और अल्बा को भाग गया था, जहाँ उस पर जय पायी गयी। परन्तु मसीह को कोई भी नहीं जीत सकता। वह जो नीचे उतरा था वही अब सबसे ऊपर जा चढ़ा, और उसे एक नाम दिया गया है जो सब नामों में श्रेष्ठ है। जी हाँ, उस ने मृत्यु, अधोलोक, और कब्र पर जय पायी, और उसके पास ही उनकी कुंजियाँ हैं। जो कुछ वह खोलता है वह खोला जाता है, जो कुछ वह बान्धता है वह बान्धा जाता है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं होता है। उसके तुल्य और उस के समान कोई भी विजेता नहीं है। केवल वही उद्धारकर्ता है, छुड़ानेवाला है। **केवल** वही परमेश्वर है और उसका नाम "प्रभु यीशु मसीह" है।

"हे यूहन्ना, मत डर। हे छोटे झुण्ड, मत डर। वह सब कुछ जो मैं हूँ, तू उसका उत्तराधिकारी है। मेरी सारी सामर्थ तेरी है। मैं जबकि तेरे मध्य में खड़ा हूँ मेरी सर्वसामर्थ तेरी है। मैं तेरे पास डर और असफलता लेकर नहीं आया हूँ, वरन मैं तो तेरे पास प्रेम और साहस, और सामर्थ ही लेकर आया हूँ। सारी सामर्थ मुझे ही दी गयी है, और यह तेरे ही उपयोग के लिये ही है। तू वचन बोल और मैं उसे कर दूंगा। यह मेरी वाचा है और यह विफल नहीं हो सकती है।"

सात सितारे और सात मोमबत्ती

प्रकाशितवाक्य 1:20

"अर्थात् उन सात तारों का भेद जिन्हें तू ने मेरे दाहिने हाथ में देखा था, और उन सात दीवटों (चिरागदानों) *का भेद यह है: वे सात तारे सातों कलीसियाओं के दूत (संदेशवाहक) हैं, और वे सात दीवट सात कलीसियाएं हैं।"*

हम पहले ही इन दो भेदों की सच्चाई ज्ञात कर चुके हैं। ओह, हमने इसका खुलासा नहीं किया है, कि ये सात सुसमाचारदूत कौन थे, लेकिन परमेश्वर की सहायता से हम इसका खुलासा करेंगे, और वह भेद पूरा हो जायेगा। सात काल तो हम जानते ही हैं। उनका उल्लेख तो वचन में पाया जाता है, और हम आगे उनमें से प्रत्येक काल का अध्ययन करते हुए इस काल तक पहुँचेंगे जिसमें कि हम रह

(मोमबत्ती) जलती तो है लेकिन थोड़ी देर के लिए ही; और फिर बुझ जाती है। वह मर खप जाती है। उसका कुछ भी शेष नहीं रहता है। परन्तु चिरागदानों में बहुत अधिक समय तक विधमान बने रहने का गुण होता है जो कि दीवटों (मोमबत्तियों) में नहीं पाया जाता है।

यदि आप चिरागदान का एक सुन्दर चित्रण देखना चाहते हैं, तो आप इसके विषय में जर्कयाह 4:1-6 में पढ़ें,

"फिर जो स्वर्गदूत मुझसे बातें करता था, उसने फिर से आकर मुझे ऐसा जगाया जैसा कोई नींद से जगाया जाये।

और उसने मुझसे पूछा, तुझे क्या देख पड़ता है? मैंने कहा एक दीवट (चिरागदान) *है जो सम्पूर्ण सोने की है और उसका कटोरा उसकी चोटी पर है, और उसपर उसके सात दीपक हैं जिनके ऊपर बत्ती के लिए सात नालियाँ हैं।*

और दीवट के पास जलपाई के दो वृक्ष हैं, एक कटोरे की दाहिनी ओर, और दूसरा उसकी बांयीं ओर।

तब मैंने उस दूत से जो मुझसे बातें करता था पूछा, हे मेरे प्रभु- यह क्या है?

जो दूत मुझसे बातें करता था उसने मुझ को उत्तर दिया, क्या तू नहीं जानता है? मैंने कहा, हे मेरे प्रभु, मैं नहीं जानता कि यह क्या है।

तब उसने उत्तर देकर कहा, जरूब्बाबेल के लिए यहोवा का यह वचन है; न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।"

यहाँ पर शुद्ध सोने का एक और चिरागदान है; यह उज्जवल रीति से जल रहा है, क्योंकि उसमें बहुत अधिक मात्रा में तेल है जो उसे उन दोनों जलपाई (जैतून) के वृक्षों से मिल रहा है जो उसके इधर उधर हैं। वे दो वृक्ष नये नियम और पुराने नियम को दर्शाते हैं, और तेल यकीनन पवित्र आत्मा को ही दर्शाता है। और केवल वही लोगों को परमेश्वर का उजियाला दे सकता है। वह दूत जो जर्कयाह से बोल रहा था वह यही कह रहा था, "जो तू देखता है उसका अर्थ यही है, कि कलीसिया अपने बल व शक्ति से कुछ भी नहीं पा सकती और उसे सारी सामर्थ पवित्र आत्मा के द्वारा ही प्राप्त होगी।"

अब आप इस चिरागदान पर गौर करें। आप ध्यान देंगे, कि इसका एक बड़ा

22 www.messagehub.info

हो चुका है। यही कारण है, कि अब दण्ड की कोई आज्ञा नहीं है। कलीसिया को क्योंकर डरना चाहिये? कौन सी प्रतिज्ञा है जिसे वह हमारे समक्ष साक्षात् प्रकट करने में कभी विफल हुआ हो? अब यह दण्ड़ या मृत्यु से क्यों भयभीत हो? इस सब पर तो जय प्राप्त की जा चुकी है। यहाँ वह महा शक्तिशाली विजेता है। यहाँ वह है जिसने देखे और अनदेखे दोनों ही जगतों पर विजय पायी है। उसने सिकन्दर की तरह विजय नहीं पायी है, जिसने तैंतीस वर्ष की आयु में संसार को जीत तो लिया था और आगे क्या जीतना है उसे यह पता नहीं था; अत: वह पाप और बलवाई जीवन का शिकार होकर मरा। उसने नैपोलियन की तरह से विजय नहीं पायी, जिसने सारे यूरोप को तो जीत लिया था, पर अन्त में वह वॉटरलू पर पराजित हुआ, और अल्बा को भाग गया था, जहाँ उस पर जय पायी गयी। परन्तु मसीह को कोई भी नहीं जीत सकता। वह जो नीचे उतरा था वही अब सबसे ऊपर जा चढ़ा, और उसे एक नाम दिया गया है जो सब नामों में श्रेष्ठ है। जी हाँ, उस ने मृत्यु, अधोलोक, और कब्र पर जय पायी, और उसके पास ही उनकी कुंजियाँ हैं। जो कुछ वह खोलता है वह खोला जाता है, जो कुछ वह बान्धता है वह बान्धा जाता है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं होता है। उसके तुल्य और उस के समान कोई भी विजेता नहीं है। केवल वही उद्धारकर्ता है, छुड़ानेवाला है। **केवल** वही परमेश्वर है और उसका नाम "प्रभु यीशु मसीह" है।

"हे यूहन्ना, मत डर। हे छोटे झुण्ड, मत डर। वह सब कुछ जो मैं हूँ, तू उसका उत्तराधिकारी है। मेरी सारी सामर्थ तेरी है। मैं जबकि तेरे मध्य में खड़ा हूँ मेरी सर्वसामर्थ तेरी है। मैं तेरे पास डर और असफलता लेकर नहीं आया हूँ, वरन मैं तो तेरे पास प्रेम और साहस, और सामर्थ ही लेकर आया हूँ। सारी सामर्थ मुझे ही दी गयी है, और यह तेरे ही उपयोग के लिये ही है। तू वचन बोल और मैं उसे कर दूंगा। यह मेरी वाचा है और यह विफल नहीं हो सकती है।"

सात सितारे और सात मोमबत्ती

प्रकाशितवाक्य 1:20

"अर्थात् उन सात तारों का भेद जिन्हें तू ने मेरे दाहिने हाथ में देखा था, और उन सात दीवटों (चिरागदानों) *का भेद यह है: वे सात तारे सातों कलीसियाओं के दूत (संदेशवाहक) हैं, और वे सात दीवट सात कलीसियाएं हैं।"*

हम पहले ही इन दो भेदों की सच्चाई ज्ञात कर चुके हैं। ओह, हमने इसका खुलासा नहीं किया है, कि ये सात सुसमाचारदूत कौन थे, लेकिन परमेश्वर की सहायता से हम इसका खुलासा करेंगे, और वह भेद पूरा हो जायेगा। सात काल तो हम जानते ही हैं। उनका उल्लेख तो वचन में पाया जाता है, और हम आगे उनमें से प्रत्येक काल का अध्ययन करते हुए इस काल तक पहुँचेंगे जिसमें कि हम रह

यीशु मसीह की सात गुना महिमा 3

(मोमबत्ती) जलती तो है लेकिन थोड़ी देर के लिए ही; और फिर बुझ जाती है। वह मर खप जाती है। उसका कुछ भी शेष नहीं रहता है। परन्तु चिरागदानों में बहुत अधिक समय तक विधमान बने रहने का गुण होता है जो कि दीवटों (मोमबत्तियों) में नहीं पाया जाता है।

यदि आप चिरागदान का एक सुन्दर चित्रण देखना चाहते हैं, तो आप इसके विषय में जर्कयाह 4:1-6 में पढ़ें,

"फिर जो स्वर्गदूत मुझसे बातें करता था, उसने फिर से आकर मुझे ऐसा जगाया जैसा कोई नींद से जगाया जाये।

और उसने मुझसे पूछा, तुझे क्या देख पड़ता है? मैंने कहा एक दीवट (चिरागदान) *है जो सम्पूर्ण सोने की है और उसका कटोरा उसकी चोटी पर है, और उसपर उसके सात दीपक हैं जिनके ऊपर बत्ती के लिए सात नालियाँ हैं।*

और दीवट के पास जलपाई के दो वृक्ष हैं, एक कटोरे की दाहिनी ओर, और दूसरा उसकी बांयीं ओर।

तब मैंने उस दूत से जो मुझसे बातें करता था पूछा, हे मेरे प्रभु- यह क्या है?

जो दूत मुझसे बातें करता था उसने मुझ को उत्तर दिया, क्या तू नहीं जानता है? मैंने कहा, हे मेरे प्रभु, मैं नहीं जानता कि यह क्या है।

तब उसने उत्तर देकर कहा, जरूब्बाबेल के लिए यहोवा का यह वचन है; न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।"

यहाँ पर शुद्ध सोने का एक और चिरागदान है; यह उज्जवल रीति से जल रहा है, क्योंकि उसमें बहुत अधिक मात्रा में तेल है जो उसे उन दोनों जलपाई (जैतून) के वृक्षों से मिल रहा है जो उसके इधर उधर हैं। वे दो वृक्ष नये नियम और पुराने नियम को दर्शाते हैं, और तेल यकीनन पवित्र आत्मा को ही दर्शाता है। और केवल वही लोगों को परमेश्वर का उजियाला दे सकता है। वह दूत जो जर्कयाह से बोल रहा था वह यही कह रहा था, "जो तू देखता है उसका अर्थ यही है, कि कलीसिया अपने बल व शक्ति से कुछ भी नहीं पा सकती और उसे सारी सामर्थ पवित्र आत्मा के द्वारा ही प्राप्त होगी।"

अब आप इस चिरागदान पर गौर करें। आप ध्यान देंगे, कि इसका एक बड़ा

कटोरा या ग्राही है जो कि उन सात भुजाओं (नालियों) के बीच स्थित है जो उससे ही निकलती हैं। यह कटोरा जैतून के तेल से भरा हुआ है, जो उन सात बत्तियों से होकर बहता है जो उन सात नालियों में लगी हुई हैं। यह ठीक वही एक तेल है जो जलता है और सात नालियों के सिरों पर प्रकाश उत्पन्न करता है। यह प्रकाश कभी भी बुझता नहीं था। याजक तो बस उस कटोरे में तेल उंडेलते रहते थे।

चिरागदान को विशेष तरीके से जलाया जाता था। पहले याजक पवित्र वेदी से अग्नि को लेता था, जोकि मूल रूप से परमेश्वर की अग्नि से जलायी जाती थी। वह पहले कटोरे के ऊपर स्थित चिरागदान को जलाता था। पहले चिरागदान की लौ से वह दूसरे चिरागदान को जलाता था। तीसरा चिरागदान अपनी अग्नि को दूसरे चिरागदान से लेता था, जैसे कि चौथा अपनी अग्नि को तीसरे से लेता था, और ऐसा तब तक होता था जब तक कि सातों चिरागदान प्रज्वलित नहीं हो जाते थे। वेदी से पवित्र अग्नि का एक चिरागदान से दूसरे चिरागदान तक जाना सातों कलीसियायी कालों में पवित्र आत्मा की एक सुन्दर प्रतिछाया है। पिन्तेकुस्त पर वह मूल रूप से उड़ेला जाना (जो कि सीधा यीशू के पास से, जो कि करुणा के सिंहासन पर था,) हुआ था-वही कलीसिया को सातों युगों में सामर्थ प्रदान कर रहा है, और सिद्ध रूप से यह दिखा रहा है; कि यीशु मसीह कल, आज और युगानुयुग एक सा है, वह अपने मूल स्वभाव में और तौर-तरीकों में ना- बदलनेवाला परमेश्वर है।

यूहन्ना 15 में यीशु ने कहा था, "मैं दाखलता हूँ, और तुम डालियाँ हों।" वही वो मुख्य दाखलता है जो उस मूल बीज की मूल जड़ से निकलती है; जिसमें जीवन होता है। अब देखिए, दाखलता पर फल नहीं लगते हैं, यह तो डालियाँ ही होती हैं जिनपर फल लगते हैं। अब आप इस पर दृष्टि डालिए: आप सन्तरे जैसा रसदार फलवाला एक वृक्ष ले सकते हैं, और उसमें चकौत्तरे की शाखा, नीबू की शाखा, खट्टे की शाखा, और उस किस्म की ही और दूसरी विभिन्न शाखाओं की कलमें साट सकते हैं, और वे सभी शाखायें बढ़ेंगी। परन्तु वे सभी शाखायें जिनकी कलमें लगायी गयी थीं उन पर सन्तरे नहीं लगेंगे। जी नहीं, श्रीमान ! नीबू की डाली पर तो नीबू ही लगेंगे, और चकौत्तरे की डाली पर तो चकौत्तरें ही लगेंगे, और इसी प्रकार और दूसरी कलमों की डालियों पर उनके अपने ही फल लगेंगे। यधपि वे डालियाँ उसी वृक्ष से ही जीवन खींच रही होती हैं; लेकिन यदि उस पेड़ से कभी कोई अपनी डाली निकलती है, तो वह सन्तरे की ही डाली होगी और उस पर सन्तरे ही लगेंगे। क्यों? क्योंकि जो जीवन डाली में है, और जो जीवन तने में है वह बिलकुल एक सा ही है, जबकि ऐसी बात उन डालियों के विषय में नहीं है जिनकी कलमें साटीं गयीं थी। वे डालियाँ जिनकी कलमें साटी गयी थीं उनका जीवन दूसरे प्रकार के स्रोतों से; दूसरे वृक्षों से, दूसरी जड़ों से, दूसरे बीजों से आया हुआ होता है। ओह, वे अपने अपने फल तो बिलकुल ठीक ठीक ही उगायेंगे; परन्तु उनपर सन्तरे नहीं लगेंगे। उनपर सन्तरे उग ही नहीं सकते हैं, क्योंकि वे असली नहीं हैं।

यहाँ पर फिर से वही बात है। वह **सूर्य** अपनी पूरी सामर्थ में चमक रहा है। ओह, परमेश्वर के पुत्र की सामर्थ उन सात चिरागदानों के बीच चमक रही है। वहाँ वह महा न्यायाधीश खड़ा है जिसने हमारे लिए दुख उठाया, और हमारे लिए मृत्यु सही। उसने दिव्य न्याय की जलजलाहट को अपने ऊपर लिया। उसने अकेले ही परमेश्वर के क्रोध की जलजलाहट के रस कंड़ में दाख रौंदी है। जैसा कि हम पहले ही वर्णन कर चुके हैं, अब उसका शब्द पापियों के लिए अंधकार की भयानकता, या चट्टानी किनारों पर मृत्यु की लहरों से उठते झाग के समान डरावना है। परन्तु पवित्र लोगों के लिए उसका शब्द ऐसा है, जैसे मानो दर्रा मधुर कलकल छलछल का गायन कर रहा होता है; कि आप चैन से लेट जाते हैं, और मसीह में सन्तुष्ट होते हैं। वह हमारे ऊपर अपने प्रेम की गरमाहट से चमक रहा होता है; और कहता है, "मत डर, मैं वही हूँ जो था, जो है, जो आने वाला है; मैं ही सर्वशक्तिमान हूँ। मेरे अलावा और कोई दूसरा नहीं है। मैं ही अल्फा और ओमिगा हूँ, **सब** कुछ मैं ही हूँ।" वही घाटी का सोसन, भोर का चमकता तारा है। वह मेरे प्राण के लिए दस हजार से अधिक प्रिय है। जी हाँ, वह महान दिन बस निकलने ही वाला है, और धर्म का सूर्य अपने पंखों में अपनी किरणों में चंगाई लिये हुए उदय होगा।

विजयी मसीह

प्रकाशितवाक्य 1:17, 18,

"जब मैंने उसे देखा, तो मैं उसके पैरों पर मुर्दा सा गिर पड़ा और उस ने मुझ पर अपना दाहिना हाथ रखकर यह कहा, कि मत डर, मैं प्रथम और अन्तिम;

और जीवता हूँ। मैं मर गया था, और अब देख, मैं युगानुयुग जीवता हूँ, और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ मेरे ही पास हैं।"

कोई भी मनुष्य उस दर्शन के पूर्ण प्रभाव को सहन नहीं कर सकता। उसकी शक्ति पूरी तरह से क्षीण हो गयी; यूहन्ना उसके पैरों पर मुर्दा सा गिर पड़ा। परन्तु प्रभु के प्रेममयी हाथ ने उसे स्पर्श किया, और आशीष देने वाले शब्द ने कहा,"मत डर, भय न खा, मैं ही प्रथम और अन्तिम हूँ। मैं ही वह हूँ जो जीवता है; और मैं मर गया था और अब देख, मैं युगानुयुग जीवता हूँ।" डरने की बात ही क्या है? वह न्याय जो उस पर तब आन पड़ा था, जब वह क्रूस पर था, जब वह कब्र में था, और जब वह नीचे उतरा था; तो वह उसने हमारे लिये ही तो सहा था। उसने पाप के घाव की सम्पूर्ण घातकता स्वयं सहन कर ली है, और इसी कारण जो मसीह यीशु में हैं उनपर दंड की आज्ञा नहीं है। इसकी निश्चितता के लिए देखिएगा, हमारा वकील ही हमारा न्यायाधीश है। वह वकील और न्यायाधीश दोनों ही है। न्यायाधीश के रूप में वह हमारा मुकदमा निपटा चुका है। हमारा मुकदमा समाप्त

4 www.messagehub.info

कटोरा या ग्राही है जो कि उन सात भुजाओं (नालियों) के बीच स्थित है जो उससे ही निकलती हैं। यह कटोरा जैतून के तेल से भरा हुआ है, जो उन सात बत्तियों से होकर बहता है जो उन सात नालियों में लगी हुई हैं। यह ठीक वही एक तेल है जो जलता है और सात नालियों के सिरों पर प्रकाश उत्पन्न करता है। यह प्रकाश कभी भी बुझता नहीं था। याजक तो बस उस कटोरे में तेल उंडेलते रहते थे।

चिरागदान को विशेष तरीके से जलाया जाता था। पहले याजक पवित्र वेदी से अग्नि को लेता था, जोकि मूल रूप से परमेश्वर की अग्नि से जलायी जाती थी। वह पहले कटोरे के ऊपर स्थित चिरागदान को जलाता था। पहले चिरागदान की लौ से वह दूसरे चिरागदान को जलाता था। तीसरा चिरागदान अपनी अग्नि को दूसरे चिरागदान से लेता था, जैसे कि चौथा अपनी अग्नि को तीसरे से लेता था, और ऐसा तब तक होता था जब तक कि सातों चिरागदान प्रज्वलित नहीं हो जाते थे। वेदी से पवित्र अग्नि का एक चिरागदान से दूसरे चिरागदान तक जाना सातों कलीसियायी कालों में पवित्र आत्मा की एक सुन्दर प्रतिछाया है। पिन्तेकुस्त पर वह मूल रूप से उड़ेला जाना (जो कि सीधा यीशू के पास से, जो कि करुणा के सिंहासन पर था,) हुआ था-वही कलीसिया को सातों युगों में सामर्थ प्रदान कर रहा है, और सिद्ध रूप से यह दिखा रहा है; कि यीशु मसीह कल, आज और युगानुयुग एक सा है, वह अपने मूल स्वभाव में और तौर-तरीकों में ना- बदलनेवाला परमेश्वर है।

यूहन्ना 15 में यीशु ने कहा था, "मैं दाखलता हूँ, और तुम डालियाँ हों।" वही वो मुख्य दाखलता है जो उस मूल बीज की मूल जड़ से निकलती है; जिसमें जीवन होता है। अब देखिए, दाखलता पर फल नहीं लगते हैं, यह तो डालियाँ ही होती हैं जिनपर फल लगते हैं। अब आप इस पर दृष्टि डालिए: आप सन्तरे जैसा रसदार फलवाला एक वृक्ष ले सकते हैं, और उसमें चकौत्तरे की शाखा, नीबू की शाखा, खट्टे की शाखा, और उस किस्म की ही और दूसरी विभिन्न शाखाओं की कलमें साट सकते हैं, और वे सभी शाखायें बढ़ेंगी। परन्तु वे सभी शाखायें जिनकी कलमें लगायी गयी थीं उन पर सन्तरे नहीं लगेंगे। जी नहीं, श्रीमान ! नीबू की डाली पर तो नीबू ही लगेंगे, और चकौत्तरे की डाली पर तो चकौत्तरें ही लगेंगे, और इसी प्रकार और दूसरी कलमों की डालियों पर उनके अपने ही फल लगेंगे। यधपि वे डालियाँ उसी वृक्ष से ही जीवन खींच रही होती हैं; लेकिन यदि उस पेड़ से कभी कोई अपनी डाली निकलती है, तो वह सन्तरे की ही डाली होगी और उस पर सन्तरे ही लगेंगे। क्यों? क्योंकि जो जीवन डाली में है, और जो जीवन तने में है वह बिलकुल एक सा ही है, जबकि ऐसी बात उन डालियों के विषय में नहीं है जिनकी कलमें साटीं गयीं थी। वे डालियाँ जिनकी कलमें साटी गयी थीं उनका जीवन दूसरे प्रकार के स्रोतों से; दूसरे वृक्षों से, दूसरी जड़ों से, दूसरे बीजों से आया हुआ होता है। ओह, वे अपने अपने फल तो बिलकुल ठीक ठीक ही उगायेंगे; परन्तु उनपर सन्तरे नहीं लगेंगे। उनपर सन्तरे उग ही नहीं सकते हैं, क्योंकि वे असली नहीं हैं।

यीशु मसीह की सात गुना महिमा 21

यहाँ पर फिर से वही बात है। वह **सूर्य** अपनी पूरी सामर्थ में चमक रहा है। ओह, परमेश्वर के पुत्र की सामर्थ उन सात चिरागदानों के बीच चमक रही है। वहाँ वह महा न्यायाधीश खड़ा है जिसने हमारे लिए दुख उठाया, और हमारे लिए मृत्यु सही। उसने दिव्य न्याय की जलजलाहट को अपने ऊपर लिया। उसने अकेले ही परमेश्वर के क्रोध की जलजलाहट के रस कंड़ में दाख रौंदी है। जैसा कि हम पहले ही वर्णन कर चुके हैं, अब उसका शब्द पापियों के लिए अंधकार की भयानकता, या चट्टानी किनारों पर मृत्यु की लहरों से उठते झाग के समान डरावना है। परन्तु पवित्र लोगों के लिए उसका शब्द ऐसा है, जैसे मानो दर्रा मधुर कलकल छलछल का गायन कर रहा होता है; कि आप चैन से लेट जाते हैं, और मसीह में सन्तुष्ट होते हैं। वह हमारे ऊपर अपने प्रेम की गरमाहट से चमक रहा होता है; और कहता है, "मत डर, मैं वही हूँ जो था, जो है, जो आने वाला है; मैं ही सर्वशक्तिमान हूँ। मेरे अलावा और कोई दूसरा नहीं है। मैं ही अल्फा और ओमिगा हूँ, **सब** कुछ मैं ही हूँ।" वही घाटी का सोसन, भोर का चमकता तारा है। वह मेरे प्राण के लिए दस हजार से अधिक प्रिय है। जी हाँ, वह महान दिन बस निकलने ही वाला है, और धर्म का सूर्य अपने पंखों में अपनी किरणों में चंगाई लिये हुए उदय होगा।

विजयी मसीह

प्रकाशितवाक्य 1:17, 18,

"जब मैंने उसे देखा, तो मैं उसके पैरों पर मुर्दा सा गिर पड़ा और उस ने मुझ पर अपना दाहिना हाथ रखकर यह कहा, कि मत डर, मैं प्रथम और अन्तिम;

और जीवता हूँ। मैं मर गया था, और अब देख, मैं युगानुयुग जीवता हूँ, और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ मेरे ही पास हैं।"

कोई भी मनुष्य उस दर्शन के पूर्ण प्रभाव को सहन नहीं कर सकता। उसकी शक्ति पूरी तरह से क्षीण हो गयी; यूहन्ना उसके पैरों पर मुर्दा सा गिर पड़ा। परन्तु प्रभु के प्रेममयी हाथ ने उसे स्पर्श किया, और आशीष देने वाले शब्द ने कहा,"मत डर, भय न खा, मैं ही प्रथम और अन्तिम हूँ। मैं ही वह हूँ जो जीवता है; और मैं मर गया था और अब देख, मैं युगानुयुग जीवता हूँ।" डरने की बात ही क्या है? वह न्याय जो उस पर तब आन पड़ा था, जब वह क्रूस पर था, जब वह कब्र में था, और जब वह नीचे उतरा था; तो वह उसने हमारे लिये ही तो सहा था। उसने पाप के घाव की सम्पूर्ण घातकता स्वयं सहन कर ली है, और इसी कारण जो मसीह यीशु में हैं उनपर दंड की आज्ञा नहीं है। इसकी निश्चितता के लिए देखिएगा, हमारा वकील ही हमारा न्यायाधीश है। वह वकील और न्यायाधीश दोनों ही है। न्यायाधीश के रूप में वह हमारा मुकदमा निपटा चुका है। हमारा मुकदमा समाप्त

मनो को पितरों की ओर फेरेगा। ऐसा न हो कि मैं आकर समस्त पृथ्वी का नाश करूँ।"

इस्राएल अब एक देश बन चुका है। अब वह अपनी सेनाओं, जल सेना, डाक-तार व्यवस्था, ध्वज, तथा उन सब बातों के साथ स्थापित है। जो एक राष्ट्र होने के लिए आवश्यक होती हैं। परन्तु अभी भी वचन का यह लेख पूरा होना है जो यह कहता है, "... या, क्या देश एक ही दिन में उत्पन्न हो सकता है?" यशायाह 66:8 के अनुसार वह दिन शीघ्र ही आ रहा है। अंजीर के पेड़ पर कलियाँ लग चुकी हैं। इस्राएली लोग मसीहा की बाट जोह रहे हैं। वे उसकी आशा कर रहे हैं, और उनकी आशाएं पूरी होने को हैं। आत्मिक रूप से इस्राएल का फिर से जन्म होगा; क्योंकि उसका उजियाला और उसका जीवन उस पर प्रकट होने को हैं।

प्रकाशितवाक्य 21:23 में कहा गया है,

"और उस नगर में सूर्य और चाँद के उजाले का प्रयोजन नहीं, क्योंकि परमेश्वर के तेज से उस में उजाला हो रहा है; और मेमना उसका दीपक है।"

यह नया यरूशलेम है। मेमना उस नगर में होगा, और उसकी उपस्थिति के कारण ही उजियाले की आवश्यकता नहीं होगी। वहाँ पर सूर्य उगेगा नहीं; क्योंकि स्वयं मेमना ही उसका सूर्य और उजियाला है। वे जातियाँ जो उसके अन्दर आयेंगी, वे उसके उजियाले में ही चलेंगी। क्या आप आनन्दित नहीं हैं, कि वह दिन हमारे अति निकट है? यूहन्ना ने उस दिन को आते हुए देखा। हे प्रभु यीशु, शीघ्र आ!

मलाकी 4:1-3,

"क्योंकि देखो, वह धधकते भट्टे का सा दिन आता है जब सब अभिमानी और दुराचारी लोग अनाज की खूंटी बन जायेंगे और उस आने वाले दिन में वे ऐसे भस्म हो जायेंगे, कि उन का पता तक न रहेगा;(य़ह उनकी ना तो जड़ और ना ही शाखा छोड़ेगा।) सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।

परन्तु तुम्हारे लिए, जो मेरे नाम का भय मानते हो, धर्म का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों से तुम चंगें हो जाओगे, और तुम निकलकर पाले हुए बछड़े की नाई कूदोगे और फंदोगे।

तब तुम दुष्टों को लताड़ डालोगे अर्थात् मेरे उस ठहराये हुए दिन में वे तुम्हारे पांवों के नीचे की राख बन जायेंगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।"

ठीक इसी प्रकार से ही कलीसिया भी है। मूल दाखलता को चीरा-काटा जा चुका है और उसमें कलमें लगायीं जा चुकी हैं। उन्होंने उसमें बैपटिस्ट कलमें, मैथोडिस्ट कलमें, प्रेसबीटेरियन कलमें, और पिन्तेकास्तल कलमें साट डाली हैं। और उन कलमों की डालियों पर बैपटिस्ट, मैथोडिस्ट, पिन्तेकोस्तल, और प्रेसबीटेरियन फल ही लग रहे हैं। (वे अपने उन नामधारी कलीसियाओं के बीज के ही फल उत्पन्न करती हैं जिनसे वे निकलती हैं)। यदि दाखलता से कभी कोई अपनी और डाली निकलती है, तो वह उस दाखलता के बिलकुल ठीक जैसी ही होगी। यह बिलकुल ठीक वैसी ही डाली होगी जैसे पिन्तेकुस्त के दिन उगी थी। वह अन्यान्य भाषाओं में बोलेगी, भविष्यवाणी करेगी, और उसके अन्दर मरे हुओं में से जी उठे यीशु मसीह की सामर्थ और चिन्ह होंगे। क्यों? क्योंकि वह अपनी ताकत दाखलता के प्राकृतिक स्रोत से ही खींच रही है। आप देखते हैं, उसकी कलमें दाखलता में नहीं लगायी गयी थी, वह तो दाखलता में ही **जन्मी** थी। जबकि वे सभी दूसरी डालियाँ जिनकी कलमें उसमें साटी गयी थीं, वे तो यह सब ही कर सकती थीं कि वे अपने-अपने फल ही लगायें, क्योंकि वे उस दाखलता से जन्मी ही नहीं थीं। वे उस मूल जीवन और मूल फल के विषय में कुछ नहीं जानती हैं ; वे जान ही नहीं सकतीं, क्योंकि उन्होंने उसमें जन्म पाया ही नहीं। यदि वे उससे ही जन्मी होतीं, तो ठीक वही जीवन जो मूल तने (यीशु) में था, उनमें से होकर आया होता, और उनमें से होकर प्रकट हुआ होता। यूहन्ना 14:12,

"मैं तुम से सच सच कहता हूँ, वह जो मुझ पर विश्वास करता है ये काम जो मैं करता हूँ उन्हें वह भी करेगा, और वह उनसे भी बड़े बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं अपने पिता के पास जाता हूँ।"

नामधारी कलीसियाएं जो कि मनुष्य के चलाये चलती हैं परमेश्वर से उत्पन्न हो ही नहीं सकती हैं, क्योंकि यह **कोई मनुष्य नहीं** है, वरन यह तो पवित्र आत्मा ही है जो जीवन देता है।

यह सोचना कितनी ही आवेशित कर देनेवाली बात है, कि सात चिरागदान अपना जीवन और उजियाला उस मुख्य कटोरे के स्रोतों से प्राप्त कर रहे हैं, क्योंकि उनकी बत्तियाँ उसके अन्दर ही डुबी हुई हैं। प्रत्येक कलीसियायी काल के सुसमाचार-दूत का यहाँ पर चित्रण किया गया है। उसका जीवन पवित्र आत्मा के द्वारा आग से प्रज्वलित रहता है। उसकी बत्ती (उसका जीवन) मसीह के अन्दर ही डुबी हुई होती है। उसी बत्ती के द्वारा ही वह मसीह के जीवन को खींच रहा होता है, और ऐसा करने के द्वारा वह कलीसिया को उजियाला देता है। वह किस प्रकार का उजियाला दे रहा होता है? बिलकुल ठीक वही उजियाला जो उस पहले चिरागदान में था जो जलाया गया था, और इसी प्रकार से ही दूसरे कलीसियायी काल से लेकर इस वर्तमान समय तक इस अन्तिम दिन का सुसमाचारदूत ठीक उस जीवन के द्वारा जो उसका मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है ठीक उसी

20 www.messagehub.info

मनो को पितरों की ओर फेरेगा। ऐसा न हो कि मैं आकर समस्त पृथ्वी का नाश करूँ।"

इस्राएल अब एक देश बन चुका है। अब वह अपनी सेनाओं, जल सेना, डाक-तार व्यवस्था, ध्वज, तथा उन सब बातों के साथ स्थापित है। जो एक राष्ट्र होने के लिए आवश्यक होती हैं। परन्तु अभी भी वचन का यह लेख पूरा होना है जो यह कहता है, "... या, क्या देश एक ही दिन में उत्पन्न हो सकता है?" यशायाह 66:8 के अनुसार वह दिन शीघ्र ही आ रहा है। अंजीर के पेड़ पर कलियाँ लग चुकी हैं। इस्राएली लोग मसीहा की बाट जोह रहे हैं। वे उसकी आशा कर रहे हैं, और उनकी आशाएं पूरी होने को हैं। आत्मिक रूप से इस्राएल का फिर से जन्म होगा; क्योंकि उसका उजियाला और उसका जीवन उस पर प्रकट होने को हैं।

प्रकाशितवाक्य 21:23 में कहा गया है,

"और उस नगर में सूर्य और चाँद के उजाले का प्रयोजन नहीं, क्योंकि परमेश्वर के तेज से उस में उजाला हो रहा है; और मेमना उसका दीपक है।"

यह नया यरूशलेम है। मेमना उस नगर में होगा, और उसकी उपस्थिति के कारण ही उजियाले की आवश्यकता नहीं होगी। वहाँ पर सूर्य उगेगा नहीं; क्योंकि स्वयं मेमना ही उसका सूर्य और उजियाला है। वे जातियाँ जो उसके अन्दर आयेंगी, वे उसके उजियाले में ही चलेंगी। क्या आप आनन्दित नहीं हैं, कि वह दिन हमारे अति निकट है? यूहन्ना ने उस दिन को आते हुए देखा। हे प्रभु यीशु, शीघ्र आ!

मलाकी 4:1-3,

"क्योंकि देखो, वह धधकते भट्टे का सा दिन आता है जब सब अभिमानी और दुराचारी लोग अनाज की खूंटी बन जायेंगे और उस आने वाले दिन में वे ऐसे भस्म हो जायेंगे, कि उन का पता तक न रहेगा;(य़ह उनकी ना तो जड़ और ना ही शाखा छोड़ेगा।) सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।

परन्तु तुम्हारे लिए, जो मेरे नाम का भय मानते हो, धर्म का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों से तुम चंगें हो जाओगे, और तुम निकलकर पाले हुए बछड़े की नाई कूदोगे और फंदोगे।

तब तुम दुष्टों को लताड़ डालोगे अर्थात् मेरे उस ठहराये हुए दिन में वे तुम्हारे पांवों के नीचे की राख बन जायेंगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।"

यीशु मसीह की सात गुना महिमा 5

ठीक इसी प्रकार से ही कलीसिया भी है। मूल दाखलता को चीरा-काटा जा चुका है और उसमें कलमें लगायीं जा चुकी हैं। उन्होंने उसमें बैपटिस्ट कलमें, मैथोडिस्ट कलमें, प्रेसबीटेरियन कलमें, और पिन्तेकास्तल कलमें साट डाली हैं। और उन कलमों की डालियों पर बैपटिस्ट, मैथोडिस्ट, पिन्तेकोस्तल, और प्रेसबीटेरियन फल ही लग रहे हैं। (वे अपने उन नामधारी कलीसियाओं के बीज के ही फल उत्पन्न करती हैं जिनसे वे निकलती हैं)। यदि दाखलता से कभी कोई अपनी और डाली निकलती है, तो वह उस दाखलता के बिलकुल ठीक जैसी ही होगी। यह बिलकुल ठीक वैसी ही डाली होगी जैसे पिन्तेकुस्त के दिन उगी थी। वह अन्यान्य भाषाओं में बोलेगी, भविष्यवाणी करेगी, और उसके अन्दर मरे हुओं में से जी उठे यीशु मसीह की सामर्थ और चिन्ह होंगे। क्यों? क्योंकि वह अपनी ताकत दाखलता के प्राकृतिक स्रोत से ही खींच रही है। आप देखते हैं, उसकी कलमें दाखलता में नहीं लगायी गयी थी, वह तो दाखलता में ही **जन्मी** थी। जबकि वे सभी दूसरी डालियाँ जिनकी कलमें उसमें साटी गयी थीं, वे तो यह सब ही कर सकती थीं कि वे अपने-अपने फल ही लगायें, क्योंकि वे उस दाखलता से जन्मी ही नहीं थीं। वे उस मूल जीवन और मूल फल के विषय में कुछ नहीं जानती हैं ; वे जान ही नहीं सकतीं, क्योंकि उन्होंने उसमें जन्म पाया ही नहीं। यदि वे उससे ही जन्मी होतीं, तो ठीक वही जीवन जो मूल तने (यीशु) में था, उनमें से होकर आया होता, और उनमें से होकर प्रकट हुआ होता। यूहन्ना 14:12,

"मैं तुम से सच सच कहता हूँ, वह जो मुझ पर विश्वास करता है ये काम जो मैं करता हूँ उन्हें वह भी करेगा, और वह उनसे भी बड़े बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं अपने पिता के पास जाता हूँ।"

नामधारी कलीसियाएं जो कि मनुष्य के चलाये चलती हैं परमेश्वर से उत्पन्न हो ही नहीं सकती हैं, क्योंकि यह **कोई मनुष्य नहीं** है, वरन यह तो पवित्र आत्मा ही है जो जीवन देता है।

यह सोचना कितनी ही आवेशित कर देनेवाली बात है, कि सात चिरागदान अपना जीवन और उजियाला उस मुख्य कटोरे के स्रोतों से प्राप्त कर रहे हैं, क्योंकि उनकी बत्तियाँ उसके अन्दर ही डुबी हुई हैं। प्रत्येक कलीसियायी काल के सुसमाचार-दूत का यहाँ पर चित्रण किया गया है। उसका जीवन पवित्र आत्मा के द्वारा आग से प्रज्वलित रहता है। उसकी बत्ती (उसका जीवन) मसीह के अन्दर ही डुबी हुई होती है। उसी बत्ती के द्वारा ही वह मसीह के जीवन को खींच रहा होता है, और ऐसा करने के द्वारा वह कलीसिया को उजियाला देता है। वह किस प्रकार का उजियाला दे रहा होता है? बिलकुल ठीक वही उजियाला जो उस पहले चिरागदान में था जो जलाया गया था, और इसी प्रकार से ही दूसरे कलीसियायी काल से लेकर इस वर्तमान समय तक इस अन्तिम दिन का सुसमाचारदूत ठीक उस जीवन के द्वारा जो उसका मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है ठीक उसी

जीवन और ठीक उसी उजियाले को साक्षात प्रकट करता है।

इसी प्रकार हम ना केवल सुसमाचारदूतों के विषय में बोल सकते हैं; वरन यहाँ पर प्रत्येक विश्वासी का प्रभावशाली ढ़ंग से उल्लेखात्मक चित्रण किया गया है। वे सभी एक ही स्रोत से ही जीवन खींच रहे हैं। वे सभी एक ही कटोरे में डुबे हुए हैं। वे तो स्वयं अपने लिए मरे हुए हैं, और उनके जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपे हुए हैं। उनपर तो पवित्र आत्मा के द्वारा मोहर हो चुकी है। इफिसियों 4:30,

"और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो जिससे तुम पर छुटकारे के दिन तक के लिए छाप की गयी है।"

कोई भी मनुष्य उन्हें उसके हाथ से छीन नहीं सकता है। उनके जीवनों से कोई रद्दोबदल (छेड़छाड़) नहीं की जा सकती है। दिखाई देनेवाला जीवन प्रज्वलित हो रहा होता है और प्रकाशमान हो रहा होता है; वह पवित्र आत्मा का उजियाला और प्रकटीकरण प्रकट कर रहा होता है। अन्दरूनी, अदृश्य जीवन परमेश्वर में छिपा हुआ होता है, और प्रभु के वचन पर निर्वाह कर रहा होता है। शैतान उन्हें छू भी नहीं सकता है। यहाँ तक कि मृत्यु भी उन्हें छू नहीं सकती है, क्योंकि मृत्यु तो अपना डंक खो चुकी है; मृत्यु अपनी जय खो चुकी है। परमेश्वर का धन्यवाद हो, उन्हें यह विजय प्रभु यीशु में और उसी के द्वारा ही मिल चुकी है। आमीन और आमीन!

न्यायाधीश

प्रकाशितवाक्य 1:13,

"और उन दीवटों के बीच में मनुष्य के पुत्र सरीखा एक पुरूष को देखा, जो पाँव तक वस्त्र पहने, और छाती पर सुनहला पटुका बाँधे हुए था।"

वहाँ पर वह खड़ा है, जो मनुष्य के पुत्र का सरीखा है। जिस प्रकार से हीरा अंगूटी में जड़ने पर चमक उठता है उसी प्रकार वह कलीसियाओं के मध्य महिमा से भरा खड़ा है। यह प्रभु का ही दिन है; क्योंकि यूहन्ना उसे याजक के रूप में नहीं, वरन उस न्यायाधीश के रूप में देखता है जो आनेवाला है। वह सुनहला पटुका जो याजक को अपनी कमर पर बाँधे हुए होना चाहिए था जबकि वह परम पवित्र स्थान में परमेश्वर की सेवा करता है, उसकी कमर पर बन्धा हुआ नहीं है; परन्तु अब यह है कि वह उसके कन्धों पर चारों ओर लिपटा हुआ है; क्योंकि अब वह याजक नहीं है वरन **न्यायाधीश** है। अब यूहन्ना 5:22 को पूरा होना होता है,

"और पिता किसी का न्याय नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया गया है।"

यीशु ने पास आकर उन्हें छुआ, और कहा, उठो; डरो मत।

तब उन्होंने अपनी आँखें उठाकर यीशु को छोड़ और किसी को नहीं देखा।

जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तब यीशु ने उन्हें यह आज्ञा दी; कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से न जी उठे तब तक जो कुछ तुम ने देखा है किसी से न कहना।

और उसके चेलों ने उस से पूछा, फिर शास्त्री क्यों कहते हैं; कि एलिय्याह का पहले आना अवश्य है?

उस ने उत्तर दिया, कि एलिय्याह तो आएगा, और सब कुछ सुधारेगा।

परन्तु मैं तुम से कहता हूँ कि एलिय्याह आ चुका; और उन्हों ने उसे नहीं पहचाना; परन्तु जैसा चाहा वैसा ही उसके साथ किया: इसी रीति से मनुष्य का पुत्र भी उनके हाथ से दुख उठाएगा।

तब चेलों ने समझा कि उस ने हम से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के विषय में कहा है।"

अब मत्ती 17:1-13 से पहले मत्ती 16:28 में यीशु ने कहा था,

"मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जो यहाँ खड़े हैं, उनमें से कितने ऐसे हैं; कि जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देख लेंगे, तब तक मृत्यु का स्वाद कभी नहीं चखेंगे।"

और उन तीन प्रेरितों ने उसे बस...उसके दूसरे आगमन के क्रमवार को देखा था। वहाँ उन्होंने पहाड़ की चोटी पर उसका रूपान्तर होते हुए देखा था। उसका वस्त्र चमचमाता हुआ श्वेत था, और उसका मुख तेज चमकते सूर्य की नाई दमक रहा था। और जबकि वह ऐसा दिखाई दे रहा था, उसके दोनों ओर मूसा और एलिय्याह खड़े दिखाई दिये थे। बिलकुल ठीक यही है वह जिस प्रकार से वह फिर से आ रहा है। यह सच है, एलिय्याह पहले आयेगा और बालकों (दुल्हन) के मनों को पूर्वजों की ओर; प्रेरितों की वचन वाली शिक्षा की ही ओर फेरेगा। मलाकी 4:5,6,

"देखो, यहोवा के बड़े और भयानक दिन के आने से पहले मैं एलिय्याह नबी को तुम्हारे पास भेजूंगा,

और वह पितरों के मनों को बालकों की ओर और बालकों के

6 www.messagehub.info

जीवन और ठीक उसी उजियाले को साक्षात प्रकट करता है।

इसी प्रकार हम ना केवल सुसमाचारदूतों के विषय में बोल सकते हैं; वरन यहाँ पर प्रत्येक विश्वासी का प्रभावशाली ढ़ंग से उल्लेखात्मक चित्रण किया गया है। वे सभी एक ही स्रोत से ही जीवन खींच रहे हैं। वे सभी एक ही कटोरे में डुबे हुए हैं। वे तो स्वयं अपने लिए मरे हुए हैं, और उनके जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपे हुए हैं। उनपर तो पवित्र आत्मा के द्वारा मोहर हो चुकी है। इफिसियों 4:30,

"और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो जिससे तुम पर छुटकारे के दिन तक के लिए छाप की गयी है।"

कोई भी मनुष्य उन्हें उसके हाथ से छीन नहीं सकता है। उनके जीवनों से कोई रद्दोबदल (छेड़छाड़) नहीं की जा सकती है। दिखाई देनेवाला जीवन प्रज्वलित हो रहा होता है और प्रकाशमान हो रहा होता है; वह पवित्र आत्मा का उजियाला और प्रकटीकरण प्रकट कर रहा होता है। अन्दरूनी, अदृश्य जीवन परमेश्वर में छिपा हुआ होता है, और प्रभु के वचन पर निर्वाह कर रहा होता है। शैतान उन्हें छू भी नहीं सकता है। यहाँ तक कि मृत्यु भी उन्हें छू नहीं सकती है, क्योंकि मृत्यु तो अपना डंक खो चुकी है; मृत्यु अपनी जय खो चुकी है। परमेश्वर का धन्यवाद हो, उन्हें यह विजय प्रभु यीशु में और उसी के द्वारा ही मिल चुकी है। आमीन और आमीन!

न्यायाधीश

प्रकाशितवाक्य 1:13,

"और उन दीवटों के बीच में मनुष्य के पुत्र सरीखा एक पुरूष को देखा, जो पाँव तक वस्त्र पहने, और छाती पर सुनहला पटुका बाँधे हुए था।"

वहाँ पर वह खड़ा है, जो मनुष्य के पुत्र का सरीखा है। जिस प्रकार से हीरा अंगूटी में जड़ने पर चमक उठता है उसी प्रकार वह कलीसियाओं के मध्य महिमा से भरा खड़ा है। यह प्रभु का ही दिन है; क्योंकि यूहन्ना उसे याजक के रूप में नहीं, वरन उस न्यायाधीश के रूप में देखता है जो आनेवाला है। वह सुनहला पटुका जो याजक को अपनी कमर पर बाँधे हुए होना चाहिए था जबकि वह परम पवित्र स्थान में परमेश्वर की सेवा करता है, उसकी कमर पर बन्धा हुआ नहीं है; परन्तु अब यह है कि वह उसके कन्धों पर चारों ओर लिपटा हुआ है; क्योंकि अब वह याजक नहीं है वरन **न्यायाधीश** है। अब यूहन्ना 5:22 को पूरा होना होता है,

"और पिता किसी का न्याय नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया गया है।"

यीशु मसीह की सात गुना महिमा 19

यीशु ने पास आकर उन्हें छुआ, और कहा, उठो; डरो मत।

तब उन्होंने अपनी आँखें उठाकर यीशु को छोड़ और किसी को नहीं देखा।

जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तब यीशु ने उन्हें यह आज्ञा दी; कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से न जी उठे तब तक जो कुछ तुम ने देखा है किसी से न कहना।

और उसके चेलों ने उस से पूछा, फिर शास्त्री क्यों कहते हैं; कि एलिय्याह का पहले आना अवश्य है?

उस ने उत्तर दिया, कि एलिय्याह तो आएगा, और सब कुछ सुधारेगा।

परन्तु मैं तुम से कहता हूँ कि एलिय्याह आ चुका; और उन्हों ने उसे नहीं पहचाना; परन्तु जैसा चाहा वैसा ही उसके साथ किया: इसी रीति से मनुष्य का पुत्र भी उनके हाथ से दुख उठाएगा।

तब चेलों ने समझा कि उस ने हम से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के विषय में कहा है।"

अब मत्ती 17:1-13 से पहले मत्ती 16:28 में यीशु ने कहा था,

"मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जो यहाँ खड़े हैं, उनमें से कितने ऐसे हैं; कि जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देख लेंगे, तब तक मृत्यु का स्वाद कभी नहीं चखेंगे।"

और उन तीन प्रेरितों ने उसे बस...उसके दूसरे आगमन के क्रमवार को देखा था। वहाँ उन्होंने पहाड़ की चोटी पर उसका रूपान्तर होते हुए देखा था। उसका वस्त्र चमचमाता हुआ श्वेत था, और उसका मुख तेज चमकते सूर्य की नाई दमक रहा था। और जबकि वह ऐसा दिखाई दे रहा था, उसके दोनों ओर मूसा और एलिय्याह खड़े दिखाई दिये थे। बिलकुल ठीक यही है वह जिस प्रकार से वह फिर से आ रहा है। यह सच है, एलिय्याह पहले आयेगा और बालकों (दुल्हन) के मनों को पूर्वजों की ओर; प्रेरितों की वचन वाली शिक्षा की ही ओर फेरेगा। मलाकी 4:5,6,

"देखो, यहोवा के बड़े और भयानक दिन के आने से पहले मैं एलिय्याह नबी को तुम्हारे पास भेजूंगा,

और वह पितरों के मनों को बालकों की ओर और बालकों के

यह एक ज्वाला के जैसे, यह वार पार करके छेदनेवाली तलवार के जैसे लोगों की अन्तरात्मा तक गया; और एक शल्य चिकित्सक की छूरी के जैसे ही इसने बीमारियों को काट कर बाहर निकाला, और बन्धकों को मुक्त किया। जहाँ कहीं भी वे आरम्भिक विश्वासी गये, वे सुसमाचार (वचन) का ही प्रचार करते चले गये; और परमेश्वर ने उस वचन की चिन्हों के द्वारा पुष्टि की। बीमार चंगे होते थे, दुष्टात्माएं बाहर निकलती थीं, और वे नई नई भाषाएं बोलते थे। यही तो था कि वचन क्रियाशील था। वह वचन विश्वास करने वाले मसीहियों के मुख से कभी भी खाली नहीं गया और इस अन्तिम काल में यह यहाँ पर वचन से निर्मित सच्ची दुल्हन में उतनी ही अधिक प्रबलता और महानता में है जितना यह पहले कभी नहीं था। हे छोटे झुण्ड, हे तुम जो संख्या में बहुत थोड़े हो, उस वचन पर ही अटल बने रहो, अपने मुख और हृदय को उससे भर डालो, और किसी दिन परमेश्वर तुम्हें राज्य देगा ।

7. उसका मुख सूर्य के समान था:

"और उसका मुख ऐसा प्रज्वलित था जैसा सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है।"

मत्ती 17:1-13,

"छः दिन बाद यीशु ने पतरस और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़ पर ले गया।

और उनके सामने उसका रूपान्तर हुआ, और उसका मुंह सूर्य की नाई चमका, और उसका वस्त्र ज्योति की नाई उजला हो गया।

और देखो, मूसा और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिये।

इस पर पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु, हमारा यहाँ रहना अच्छा है; यदि तेरी इच्छा हो तो हम यहाँ पर तीन मंडप बनायें; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।

वह बोल ही रहा था, कि देखो, एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और देखो; उस बादल से यह शब्द निकला, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस में मैं अति प्रसन्न हूँ: उसकी सुनो।

जब चेलों ने यह सुना, तो चेले मुंह के बल गिर गये, और अत्यन्त डर गये।

उसकी सेवा पूरी हो चुकी है। याजक वाला कार्य भार खत्म हो गया है। भविष्वाणी वाले दिन खत्म हो गये हैं। वह **न्यायधीश** वाले वस्त्र धारण किये हुए खड़ा है।

यीशु मसीह की सात गुना महिमा

प्रकाशितवाक्य 1: 14-16,

"उसके सिर और बाल श्वेत ऊन वरन पाले के से उज्जवल थे, और उसकी आँखें आग की ज्वाला की नाई थी,

और उसके पांव उत्तम पीतल के समान थे जो मानो भट्टी में तपाये गये हों: और उसका शब्द बहुत जल के शब्द की नाई था

और वह अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिये हुए था और उसके मुख से चोखी दोधारी तलवार निकलती थी; और उसका मुँह ऐसे प्रज्वलित था जैसे सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है।"

उस यूहन्ना के लिए जिसे वचन के कारण काले-पानी का दण्ड भुगतना पड़ा, यीशु का दृष्टिगोचर होना कितना आत्माविभोर और उत्प्रेणा से भर देने वाला था, और देखो, **जीवित वचन** उसके सम्मुख खड़ा हुआ है। यह क्या ही ज्योतिमय दर्शन है, क्योंकि इसमें दिये गये प्रत्येक विवरणात्मक विशेषण का महत्व है। उसके महिमामय व्यक्तित्व का क्या ही प्रकाशन है।

1.उसके बाल पाले के से श्वेत

यूहन्ना सबसे पहले उसके बालों की सफेदी देखता है और उसका वर्णन करता है। वे सफेद थे और हिम की नाई उज्जवल थे। ऐसा उसकी उम्र के कारण नहीं था। ओह नहीं! एकदम सफेद बाल वृध्दावस्था को नहीं दर्शाते हैं, अपितु अनुभव, परिपक्वता, और समझ को ही दर्शाते हैं। वह जो अनन्त है उसकी कोई आयु नहीं होती है। परमेश्वर के लिए समय है ही क्या ? समय तो परमेश्वर के लिए बहुत ही छोटी बात है, लेकिन परमेश्वर के लिए समझ अधिक मायने रखती है। यह ऐसा ही है जैसे जब सुलैमान ने इस्राएल के लोगों का न्याय करने के लिए परमेश्वर से बुद्धि माँगी थी। अब वह समस्त पृथ्वी के न्यायाधीश के रूप में आ रहा है। उसे बुद्धि के ताज से सजाया जायेगा। यही है वह जो श्वेत और उज्जवल बाल दर्शाते हैं। आप ज़रा इसे दानिय्येल 7:9-14 में देखिएगा,

"मैंने देखते देखते अन्त में क्या देखा, कि सिंहासन रखे गये, और कोई अति प्राचीन विराजमान हुआ, उसका वस्त्र हिम सा उजला, और उसके बाल निर्मल ऊन के सरीखे थे; उसका

18 www.messagehub.info

यह एक ज्वाला के जैसे, यह वार पार करके छेदनेवाली तलवार के जैसे लोगों की अन्तरात्मा तक गया; और एक शल्य चिकित्सक की छूरी के जैसे ही इसने बीमारियों को काट कर बाहर निकाला, और बन्धकों को मुक्त किया। जहाँ कहीं भी वे आरम्भिक विश्वासी गये, वे सुसमाचार (वचन) का ही प्रचार करते चले गये; और परमेश्वर ने उस वचन की चिन्हों के द्वारा पुष्टि की। बीमार चंगे होते थे, दुष्टात्माएं बाहर निकलती थीं, और वे नई नई भाषाएं बोलते थे। यही तो था कि वचन क्रियाशील था। वह वचन विश्वास करने वाले मसीहियों के मुख से कभी भी खाली नहीं गया और इस अन्तिम काल में यह यहाँ पर वचन से निर्मित सच्ची दुल्हन में उतनी ही अधिक प्रबलता और महानता में है जितना यह पहले कभी नहीं था। हे छोटे झुण्ड, हे तुम जो संख्या में बहुत थोड़े हो, उस वचन पर ही अटल बने रहो, अपने मुख और हृदय को उससे भर डालो, और किसी दिन परमेश्वर तुम्हें राज्य देगा ।

7. उसका मुख सूर्य के समान था:

"और उसका मुख ऐसा प्रज्वलित था जैसा सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है।"

मत्ती 17:1-13,

"छः दिन बाद यीशु ने पतरस और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़ पर ले गया।

और उनके सामने उसका रूपान्तर हुआ, और उसका मुंह सूर्य की नाई चमका, और उसका वस्त्र ज्योति की नाई उजला हो गया।

और देखो, मूसा और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिये।

इस पर पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु, हमारा यहाँ रहना अच्छा है; यदि तेरी इच्छा हो तो हम यहाँ पर तीन मंडप बनायें; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।

वह बोल ही रहा था, कि देखो, एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और देखो; उस बादल से यह शब्द निकला, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस में मैं अति प्रसन्न हूँ: उसकी सुनो।

जब चेलों ने यह सुना, तो चेले मुंह के बल गिर गये, और अत्यन्त डर गये।

यीशु मसीह की सात गुना महिमा 7

उसकी सेवा पूरी हो चुकी है। याजक वाला कार्य भार खत्म हो गया है। भविष्वाणी वाले दिन खत्म हो गये हैं। वह **न्यायधीश** वाले वस्त्र धारण किये हुए खड़ा है।

यीशु मसीह की सात गुना महिमा

प्रकाशितवाक्य 1: 14-16,

"उसके सिर और बाल श्वेत ऊन वरन पाले के से उज्जवल थे, और उसकी आँखें आग की ज्वाला की नाई थी,

और उसके पांव उत्तम पीतल के समान थे जो मानो भट्टी में तपाये गये हों: और उसका शब्द बहुत जल के शब्द की नाई था

और वह अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिये हुए था और उसके मुख से चोखी दोधारी तलवार निकलती थी; और उसका मुँह ऐसे प्रज्वलित था जैसे सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है।"

उस यूहन्ना के लिए जिसे वचन के कारण काले-पानी का दण्ड भुगतना पड़ा, यीशु का दृष्टिगोचर होना कितना आत्माविभोर और उत्प्रेणा से भर देने वाला था, और देखो, **जीवित वचन** उसके सम्मुख खड़ा हुआ है। यह क्या ही ज्योतिमय दर्शन है, क्योंकि इसमें दिये गये प्रत्येक विवरणात्मक विशेषण का महत्व है। उसके महिमामय व्यक्तित्व का क्या ही प्रकाशन है।

1.उसके बाल पाले के से श्वेत

यूहन्ना सबसे पहले उसके बालों की सफेदी देखता है और उसका वर्णन करता है। वे सफेद थे और हिम की नाई उज्जवल थे। ऐसा उसकी उम्र के कारण नहीं था। ओह नहीं! एकदम सफेद बाल वृध्दावस्था को नहीं दर्शाते हैं, अपितु अनुभव, परिपक्वता, और समझ को ही दर्शाते हैं। वह जो अनन्त है उसकी कोई आयु नहीं होती है। परमेश्वर के लिए समय है ही क्या ? समय तो परमेश्वर के लिए बहुत ही छोटी बात है, लेकिन परमेश्वर के लिए समझ अधिक मायने रखती है। यह ऐसा ही है जैसे जब सुलैमान ने इस्राएल के लोगों का न्याय करने के लिए परमेश्वर से बुद्धि माँगी थी। अब वह समस्त पृथ्वी के न्यायाधीश के रूप में आ रहा है। उसे बुद्धि के ताज से सजाया जायेगा। यही है वह जो श्वेत और उज्जवल बाल दर्शाते हैं। आप ज़रा इसे दानिय्येल 7:9-14 में देखिएगा,

"मैंने देखते देखते अन्त में क्या देखा, कि सिंहासन रखे गये, और कोई अति प्राचीन विराजमान हुआ, उसका वस्त्र हिम सा उजला, और उसके बाल निर्मल ऊन के सरीखे थे; उसका

सिंहासन अनिमय और उसके पहिये धधकती आग से देख पड़ते थे।

उस प्राचीन के सम्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही थी। फिर हजारों हजार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे और लाखों लाख लोग उसके सम्मुख हाज़िर थे; फिर न्यायी बैठ गये, (न्याय होता है।) *और पुस्तकें खोली गयीं।*

उस समय उस सींग का बड़ा बोल सुनकर मैं देखता रहा, और देखते देखते अन्त में देखा कि वह जन्तु घात किया गया और उसका शरीर धधकती हुई आग से भस्म किया गया।

और रहे हुए जन्तुओं का अधिकार ले लिया गया, परन्तु उनका प्राण कुछ समय के लिए बचाया गया।

मैंने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान (मनुष्य के पुत्र) *सा कोई आकाश के बादल समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुँचा और उसको वे उसके समीप लाये।*

तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश देश और जाति जाति के लोग और भिन्न भिन्न भाषा बोलने वाले सब उसके आधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा।"

ऐसा ही है। दानिय्येल ने देखा था, कि उसके बाल सफेद थे। वह न्यायाधीश था जो कि पुस्तकों को खोल रहा था और उन से न्याय कर रहा था। दानिय्येल ने उसे बादलों में आते हुये देखा था। बिलकुल ठीक ऐसा ही यूहन्ना ने देखा था। उन दोनों ने उसे बिलकुल ठीक एक सा ही देखा था। उन्होंने महान्यायाधीश को अपने कन्धे पर न्यायीवाला बागा डाले हुए देखा था; वह शुद्ध और पवित्र बुद्धि से भरा हुआ खड़ा हुआ था; और वह अपनी धार्मिकता में संसार का न्याय करने के लिए पूर्णतः योग्य था। हाल्लिलूय्याह !

यहाँ तक कि संसार इस प्रतीकात्मक शब्दावली को समझता है, क्योंकि प्राचीन समयों में न्यायाधीश न्यायालय में सफेद विग और एक लम्बा बागा पहने हुए आते थे और अदालत की कारवायी करते थे; जो कि उसके उस (सिर से लेकर पाँव तक के) सम्पूर्ण अधिकार को दर्शाता था, कि वह न्याय के लिए सक्षम है।

2. उसकी आँखें आग की ज्वाला की नाई

जरा इसके विषय में सोचिए! एक बार वे ही आँखे दुःख और करूणा के

अलग अलग कर देगा। यही है वह जो रोमियों 2:3 में कहा गया है,

"और हे मनुष्य, तू जो ऐसे ऐसे काम करनेवालों पर दोष लगाता है, और आप वे ही काम करता है; क्या यह समझता है, कि तू परमेश्वर के दण्ड से बच जायेगा?"

इसके बाद वह आगे कहता है, कि परमेश्वर लोगों का किस प्रकार न्याय करने जा रहा है। यह यहाँ 5 से 17 वें पद में दिया गया है। हठीले कठोर मनों का न्याय होगा। उनके कामों का न्याय होगा। उनके ध्येयों का न्याय किया जायेगा। परमेश्वर के सम्मुख कोई पक्षपात नहीं होगा, परन्तु सब का उसी वचन के द्वारा न्याय होगा; उससे कोई भी बचने नहीं जा रहा है। जिन्होंने सुना और उसपर कान नहीं लगायें, उनका न्याय उससे होगा जो उन्होंने सुना था। जो उस पर यह कह कर टिके रहे, कि वे इसका विश्वास करते हैं; लेकिन उसे जिया नहीं, उनका भी न्याय होगा। हर एक बात खुले में प्रकट की जायेगी। और ऊँचे से चिल्लाकर बतायी जायेगी। ओह, हम तब सचमुच में ही इतिहास समझ जायेंगे। सभी युगों की एक भी भेद भरी बात रख न छोड़ी जायेगी।

परन्तु क्या आप जानते हैं, कि वह इस युग में जिसमें हम रह रहे हैं, स्त्रियों और पुरूषों के हृदयों के गुप्त भेदों को प्रकट कर रहा है? हृदयों की गुप्त बातों को परमेश्वर के अतिरिक्त और कौन प्रकट कर सकता है ? इब्रानियों 4:12,

"क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हरएक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।"

यह वचन ही है! यह बिलकुल ठीक वही कर रहा है जिसके लिए यह भेजा गया था, क्योंकि यह (वचन) सामर्थ से भरा हुआ है। यह ठीक वही आत्मा ही है, जो यीशु (वचन) में था, जो इस अन्तिम काल में कलीसिया में फिर से एक अन्तिम चिन्ह के रूप में विधमान है; और लोगों को उस न्याय से दूर करने का प्रयास कर रहा है; क्योंकि जिन्होंने उसे (उस वचन को) ठुकरा दिया है; वे तो अब पहले से ही न्याय के अन्दर आ चुके हैं, वे उसे फिर से क्रूस पर चढा रहे हैं। इब्रानियों 6:6,

"यदि वे भटक जाये; तो उन्हें मन फिराव के लिए फिर नया बनाना अन्होना है; क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र को अपने लिए क्रूस पर चढ़ाते हैं, और प्रकट में उस पर कंलक लगाते हैं।"

अब पौलुस ने कहा था, कि वचन अपनी सामर्थ के साथ साथ ललकार के साथ आया। जो वचन प्रचारा गया उसने सचमुच में स्वयं अपने को ही प्रकट किया।

8 www.messagehub.info

सिंहासन अनिमय और उसके पहिये धधकती आग से देख पड़ते थे।

उस प्राचीन के सम्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही थी। फिर हजारों हजार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे और लाखों लाख लोग उसके सम्मुख हाज़िर थे; फिर न्यायी बैठ गये, (न्याय होता है।) *और पुस्तकें खोली गयीं।*

उस समय उस सींग का बड़ा बोल सुनकर मैं देखता रहा, और देखते देखते अन्त में देखा कि वह जन्तु घात किया गया और उसका शरीर धधकती हुई आग से भस्म किया गया।

और रहे हुए जन्तुओं का अधिकार ले लिया गया, परन्तु उनका प्राण कुछ समय के लिए बचाया गया।

मैंने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान (मनुष्य के पुत्र) *सा कोई आकाश के बादल समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुँचा और उसको वे उसके समीप लाये।*

तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश देश और जाति जाति के लोग और भिन्न भिन्न भाषा बोलने वाले सब उसके आधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा।"

ऐसा ही है। दानिय्येल ने देखा था, कि उसके बाल सफेद थे। वह न्यायाधीश था जो कि पुस्तकों को खोल रहा था और उन से न्याय कर रहा था। दानिय्येल ने उसे बादलों में आते हुये देखा था। बिलकुल ठीक ऐसा ही यूहन्ना ने देखा था। उन दोनों ने उसे बिलकुल ठीक एक सा ही देखा था। उन्होंने महान्यायाधीश को अपने कन्धे पर न्यायीवाला बागा डाले हुए देखा था; वह शुद्ध और पवित्र बुद्धि से भरा हुआ खड़ा हुआ था; और वह अपनी धार्मिकता में संसार का न्याय करने के लिए पूर्णतः योग्य था। हाल्लिलूय्याह !

यहाँ तक कि संसार इस प्रतीकात्मक शब्दावली को समझता है, क्योंकि प्राचीन समयों में न्यायाधीश न्यायालय में सफेद विग और एक लम्बा बागा पहने हुए आते थे और अदालत की कारवायी करते थे; जो कि उसके उस (सिर से लेकर पाँव तक के) सम्पूर्ण अधिकार को दर्शाता था, कि वह न्याय के लिए सक्षम है।

2. उसकी आँखें आग की ज्वाला की नाई

जरा इसके विषय में सोचिए! एक बार वे ही आँखे दुःख और करूणा के

यीशु मसीह की सात गुना महिमा 17

अलग अलग कर देगा। यही है वह जो रोमियों 2:3 में कहा गया है,

"और हे मनुष्य, तू जो ऐसे ऐसे काम करनेवालों पर दोष लगाता है, और आप वे ही काम करता है; क्या यह समझता है, कि तू परमेश्वर के दण्ड से बच जायेगा?"

इसके बाद वह आगे कहता है, कि परमेश्वर लोगों का किस प्रकार न्याय करने जा रहा है। यह यहाँ 5 से 17 वें पद में दिया गया है। हठीले कठोर मनों का न्याय होगा। उनके कामों का न्याय होगा। उनके ध्येयों का न्याय किया जायेगा। परमेश्वर के सम्मुख कोई पक्षपात नहीं होगा, परन्तु सब का उसी वचन के द्वारा न्याय होगा; उससे कोई भी बचने नहीं जा रहा है। जिन्होंने सुना और उसपर कान नहीं लगायें, उनका न्याय उससे होगा जो उन्होंने सुना था। जो उस पर यह कह कर टिके रहे, कि वे इसका विश्वास करते हैं; लेकिन उसे जिया नहीं, उनका भी न्याय होगा। हर एक बात खुले में प्रकट की जायेगी। और ऊँचे से चिल्लाकर बतायी जायेगी। ओह, हम तब सचमुच में ही इतिहास समझ जायेंगे। सभी युगों की एक भी भेद भरी बात रख न छोड़ी जायेगी।

परन्तु क्या आप जानते हैं, कि वह इस युग में जिसमें हम रह रहे हैं, स्त्रियों और पुरूषों के हृदयों के गुप्त भेदों को प्रकट कर रहा है? हृदयों की गुप्त बातों को परमेश्वर के अतिरिक्त और कौन प्रकट कर सकता है ? इब्रानियों 4:12,

"क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हरएक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।"

यह वचन ही है! यह बिलकुल ठीक वही कर रहा है जिसके लिए यह भेजा गया था, क्योंकि यह (वचन) सामर्थ से भरा हुआ है। यह ठीक वही आत्मा ही है, जो यीशु (वचन) में था, जो इस अन्तिम काल में कलीसिया में फिर से एक अन्तिम चिन्ह के रूप में विधमान है; और लोगों को उस न्याय से दूर करने का प्रयास कर रहा है; क्योंकि जिन्होंने उसे (उस वचन को) ठुकरा दिया है; वे तो अब पहले से ही न्याय के अन्दर आ चुके हैं, वे उसे फिर से क्रूस पर चढा रहे हैं। इब्रानियों 6:6,

"यदि वे भटक जाये; तो उन्हें मन फिराव के लिए फिर नया बनाना अन्होना है; क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र को अपने लिए क्रूस पर चढ़ाते हैं, और प्रकट में उस पर कंलक लगाते हैं।"

अब पौलुस ने कहा था, कि वचन अपनी सामर्थ के साथ साथ ललकार के साथ आया। जो वचन प्रचारा गया उसने सचमुच में स्वयं अपने को ही प्रकट किया।

और गांठ-गांठ और गूदे गूदे को अलग करके वार पार छेदता है, और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है। "

उसके मुख से चोखी दोधारी तलवार निकलती थी जो कि **परमेश्वर का वचन** है। प्रकाशितवाक्य 19:11-16,

"फिर मैंने स्वर्ग को खुला हुआ देखा; और देखता हूँ कि एक श्वेत घोड़ा है; और उस पर एक सवार है, जो विश्वासयोग्य, और सत्य कहलाता है; और वह धर्म के साथ न्याय और लड़ाई करता है।

उसकी आँखें आग की ज्वाला हैं: और उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं; और उसका एक नाम लिखा है, जिसे उसको छोड़ और कोई नहीं जानता।

और वह लोहू से छिड़का हुआ वस्त्र पहिने हुए है: और उसका नाम परमेश्वर का वचन है।

और स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहिने हुए उसके पीछे पीछे है।

और जाति जाति को मारने के लिए उसके मुँह से एक चोखी तलवार निकलती है, और वह लोहे का राजदण्ड लिये हुए उनपर राज्य करेगा, और वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुण्ड में दाख रौदेंगा।

और उसके वस्त्र और जांघ पर यह नाम लिखा है, ***राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु।***"

यूहन्ना 1:48,

"नतएनल ने उस से पूछा, तू मुझे कब से जानता है? यीशु ने उसे उत्तर दिया और कहा, इससे पहले कि फिलिप्पुस तुझे बुलाता, जब तू अंजीर के वृक्ष के तले था, मैंने तुझे देखा।"

यही तो बात है। जब वह आता है, तो वह वचन ही सब जातियों और सब लोगों के विरूध्द खड़ा होगा; और कोई भी उसके आगे ठहर ना सकेगा। वह हर एक मन में क्या है, बिलकुल ठीक वैसे ही प्रकट कर देगा जैसे कि उसने नतनएल के साथ किया था। परमेश्वर का वचन दिखा देगा, कि किसने परमेश्वर की मर्जी को पूरा किया था, और किसने नहीं किया था। वह हर एक मनुष्य के गुप्त कामों को प्रकट कर देगा, और प्रकट कर देगा कि उसने उन्हें क्यों किया था। वह सब कुछ

आँसूओं से डबडबा उठी थीं। वे ही आँखें स्नेह से द्रवित होकर लाज़र की कब्र पर आँसूओं से भर उठी थीं। ये वे ही आँखें हैं जिन्होंने उस हथियारे की बुराई पर दृष्टि नहीं की थी जो उसके साथ क्रूस पर लटका हुआ था, मगर दुःख से रोकर चिल्लाई, "हे पिता, उन्हें क्षमा कर।" अब वे ही आँखें आग की ज्वाला हैं, वे उस न्यायी की आँखें हैं जो उन से हिसाब लेगा जिन्होंने उसे ठुकरा दिया था।

जब वह मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ, तो उसने सारी मानवीय भावनाओं में से सबसे अधिक जिसे प्रकट किया था, वह यह थी; कि वह अक्सर रोया था। लेकिन उस रूदन व दुःख के पीछे अभी भी वह महान परमेश्वर ही था।

ठीक उन्हीं आँखों ने दर्शन देखें थे। उन्होंने ही लोगों के हृदयों में गहरी निगाह डाली थी, और उनके विचारों को पढ़ लिया था, और उनके सारे विभिन्न तौर-तरीकों को जान लिया था। उन मरणशील आँखों से दृष्टि करता हुआ यह परमेश्वर ही था, जो उनके लिये रो उठा था जो नहीं जानते थे वह किस लिए था, "... यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूँ, तो तुम अपने पापों में मरोगे।" (यूहन्ना 8:24)

"यदि मैं अपने पिता के कामों को नहीं करता हूँ तो मेरी प्रतीति न करो, यदि मैं करता हूँ तो चाहे मेरी प्रतीति न करो। परन्तु उन कामों की तो प्रतीति करो।.... "

यूहन्ना 10:37-38! वह तो पुराने समय के यिर्मयाह के जैसे ही रोनेवाला भविष्यद्वक्ता था, क्योंकि लोगों ने परमेश्वर के वचन को ग्रहण नहीं किया था और अपने को प्रकाशन से दूर कर लिया था।

यहाँ तक कि उस न्यायाधीश की वे आग से धधकती आँखें इस समय सभी लोगों के जीवनों का लेखा-जोखा रख रही हैं। वे पूरी पृथ्वी पर आगे पीछे सभी जगह दृष्टि कर रही हैं, कुछ भी ऐसा नहीं है जो वह ना जानता हो। वह हृदयों के विचारों को जानता है; और जानता है कि हर एक क्या करने का इरादा रखता है। कुछ भी ऐसा छिपा हुआ नहीं है जो प्रकट ना किया जाये, क्योंकि उसके सम्मुख वह सब कुछ उघड़ा हुआ है जो हम उसके प्रति करते हैं। जरा इसके विषय में सोचिएं, यहाँ तक कि वह ये भी जानता है जो आप इस समय सोच रहे हैं।

जी हाँ, वहाँ वह धधकती आँखों सहित एक न्यायाधीश के रूप में न्याय करने के लिए खड़ा हुआ है। करुणा का दिन समाप्त हो चुका होता है। ओह, काश लोग पश्चताप करके उसके धार्मिकता वाले महिमामय मुख को खोज सकें, जबकि अभी समय है। काश लोग उसकी गोद को अपने सिर टिकने का स्थान बना सकें, इससे पहले कि यह दुनिया आग से भस्म करी जाये।

16 www.messagehub.info

और गांठ-गांठ और गूदे गूदे को अलग करके वार पार छेदता है, और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है। "

उसके मुख से चोखी दोधारी तलवार निकलती थी जो कि **परमेश्वर का वचन** है। प्रकाशितवाक्य 19:11-16,

"फिर मैंने स्वर्ग को खुला हुआ देखा; और देखता हूँ कि एक श्वेत घोड़ा है; और उस पर एक सवार है, जो विश्वासयोग्य, और सत्य कहलाता है; और वह धर्म के साथ न्याय और लड़ाई करता है।

उसकी आँखें आग की ज्वाला हैं: और उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं; और उसका एक नाम लिखा है, जिसे उसको छोड़ और कोई नहीं जानता।

और वह लोहू से छिड़का हुआ वस्त्र पहिने हुए है: और उसका नाम परमेश्वर का वचन है।

और स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहिने हुए उसके पीछे पीछे है।

और जाति जाति को मारने के लिए उसके मुँह से एक चोखी तलवार निकलती है, और वह लोहे का राजदण्ड लिये हुए उनपर राज्य करेगा, और वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुण्ड में दाख रौदेंगा।

और उसके वस्त्र और जांघ पर यह नाम लिखा है, ***राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु।***"

यूहन्ना 1:48,

"नतएनल ने उस से पूछा, तू मुझे कब से जानता है? यीशु ने उसे उत्तर दिया और कहा, इससे पहले कि फिलिप्पुस तुझे बुलाता, जब तू अंजीर के वृक्ष के तले था, मैंने तुझे देखा।"

यही तो बात है। जब वह आता है, तो वह वचन ही सब जातियों और सब लोगों के विरूध्द खड़ा होगा; और कोई भी उसके आगे ठहर ना सकेगा। वह हर एक मन में क्या है, बिलकुल ठीक वैसे ही प्रकट कर देगा जैसे कि उसने नतनएल के साथ किया था। परमेश्वर का वचन दिखा देगा, कि किसने परमेश्वर की मर्जी को पूरा किया था, और किसने नहीं किया था। वह हर एक मनुष्य के गुप्त कामों को प्रकट कर देगा, और प्रकट कर देगा कि उसने उन्हें क्यों किया था। वह सब कुछ

यीशु मसीह की सात गुना महिमा 9

आँसूओं से डबडबा उठी थीं। वे ही आँखें स्नेह से द्रवित होकर लाज़र की कब्र पर आँसूओं से भर उठी थीं। ये वे ही आँखें हैं जिन्होंने उस हथियारे की बुराई पर दृष्टि नहीं की थी जो उसके साथ क्रूस पर लटका हुआ था, मगर दुःख से रोकर चिल्लाई, "हे पिता, उन्हें क्षमा कर।" अब वे ही आँखें आग की ज्वाला हैं, वे उस न्यायी की आँखें हैं जो उन से हिसाब लेगा जिन्होंने उसे ठुकरा दिया था।

जब वह मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ, तो उसने सारी मानवीय भावनाओं में से सबसे अधिक जिसे प्रकट किया था, वह यह थी; कि वह अक्सर रोया था। लेकिन उस रूदन व दुःख के पीछे अभी भी वह महान परमेश्वर ही था।

ठीक उन्हीं आँखों ने दर्शन देखें थे। उन्होंने ही लोगों के हृदयों में गहरी निगाह डाली थी, और उनके विचारों को पढ़ लिया था, और उनके सारे विभिन्न तौर-तरीकों को जान लिया था। उन मरणशील आँखों से दृष्टि करता हुआ यह परमेश्वर ही था, जो उनके लिये रो उठा था जो नहीं जानते थे वह किस लिए था, "... यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूँ, तो तुम अपने पापों में मरोगे।" (यूहन्ना 8:24)

"यदि मैं अपने पिता के कामों को नहीं करता हूँ तो मेरी प्रतीति न करो, यदि मैं करता हूँ तो चाहे मेरी प्रतीति न करो। परन्तु उन कामों की तो प्रतीति करो।.... "

यूहन्ना 10:37-38! वह तो पुराने समय के यिर्मयाह के जैसे ही रोनेवाला भविष्यद्वक्ता था, क्योंकि लोगों ने परमेश्वर के वचन को ग्रहण नहीं किया था और अपने को प्रकाशन से दूर कर लिया था।

यहाँ तक कि उस न्यायाधीश की वे आग से धधकती आँखें इस समय सभी लोगों के जीवनों का लेखा-जोखा रख रही हैं। वे पूरी पृथ्वी पर आगे पीछे सभी जगह दृष्टि कर रही हैं, कुछ भी ऐसा नहीं है जो वह ना जानता हो। वह हृदयों के विचारों को जानता है; और जानता है कि हर एक क्या करने का इरादा रखता है। कुछ भी ऐसा छिपा हुआ नहीं है जो प्रकट ना किया जाये, क्योंकि उसके सम्मुख वह सब कुछ उघड़ा हुआ है जो हम उसके प्रति करते हैं। जरा इसके विषय में सोचिएं, यहाँ तक कि वह ये भी जानता है जो आप इस समय सोच रहे हैं।

जी हाँ, वहाँ वह धधकती आँखों सहित एक न्यायाधीश के रूप में न्याय करने के लिए खड़ा हुआ है। करुणा का दिन समाप्त हो चुका होता है। ओह, काश लोग पश्चताप करके उसके धार्मिकता वाले महिमामय मुख को खोज सकें, जबकि अभी समय है। काश लोग उसकी गोद को अपने सिर टिकने का स्थान बना सकें, इससे पहले कि यह दुनिया आग से भस्म करी जाये।

3. पाँव पीतल के समान

"और उसके पाँव उत्तम पीतल के समान थे जो मानो भट्टी में तपाये गये हों।" पीतल अपनी विशिष्ट कठोरता के लिये जाना जाता है। ऐसा कुछ भी ज्ञात नहीं है जिसे आप उसमें मिलाकर कोमल कर सकें। परन्तु यह पीतल जो उसके पाँव का वर्णन करता है और भी असाधारण है, क्योंकि उसे अभी भी उस अवस्था में धधकते भट्टे के परीक्षण का सामना करना है, उस परीक्षा में से होकर गुजरना है जिससे होकर कभी कोई नहीं गुजरा है। और यह बिलकुल ठीक बात है। और पीतल दिव्य न्याय को दर्शाता है: यह उस न्याय को दर्शाता है जिसकी परमेश्वर आज्ञा देता है और जिसे परमेश्वर ही घटित करता है। यूहन्ना 3:14-19,

"और जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाये।

ताकि जो कोई विश्वास करे नाश न हो पर अनन्त जीवन पाये।

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उसपर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाये।

परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इस लिए नहीं भेजा, कि जगत पर दंड़ की आज्ञा दे; परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाये।

जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दंड़ की आज्ञा नहीं होती है; परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिए कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र पर विश्वास नहीं किया।

और दंड़ का कारण यह है कि ज्योति जगत में आयी, और मनुष्यों ने अंधकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना, क्योंकि उन के काम बुरे थे।"

गिनती 21:8,9,

"यहोवा ने मूसा से कहा, एक तेज विषवाले सांप की प्रतिमा बनवाकर खम्भे पर लटका, तब जो सांप से डसा हुआ उसको देख ले, वह जीवित बच जायेगा।

सो मूसा ने एक पीतल का सांप बनवाकर खम्भे पर लटकाया, तब सांप के डसो हुओं में से जिस जिस ने उस पीतल के सांप की

और प्रेम, धीरज, नम्रता, संयम, सज्जनता, वफादारी को दर्शाया और परमेश्वर ने चिन्ह और चमत्कारों और आश्चर्यक्रमों के द्वारा उनका समर्थन किया। उन पर हठधर्मी और पवित्र पाखंडी होने का आरोप लगाया गया। उन्हें संस्थाओं से बाहर निकाल दिया गया; और वे हंसी-ठट्ठा में उड़ाये जाने के बाद भी अड़िग बने रहें; लेकिन ये वचन के प्रति सच्चे बने रहे।

अब एक धार्मिक मत-सिद्धांत के लिये खड़े रहना और उसके प्रति सच्चा बना रहना कठिन नहीं होता है। ऐसा करना आसान होता है; क्योंकि शैतान इस सब के ठीक समर्थन में होता है। परन्तु परमेश्वर के वचन के प्रति सच्चे बने रहने और उसके पीछे चलने के विषय में कुछ और ही बात होती है, जो वचन ने पिन्तेकुस्त के उपरान्त मूल रूप से पैदा किया था।

अधिक समय नहीं हुआ है, कि एक व्यक्ति ने मुझ से कहा था, कि रोमन कैथोलिक कलीसिया ही सच्ची कलीसिया होनी चाहिये जैसाकि वह उसके प्रति सच्ची बनी रही है जिसका उसने सभी वर्षों में विश्वास किया है; और वह उसी पर ही बढ़ती चली जा रही है, और वह बदल नहीं रही है। वह ऐसी बिलकुल भी नहीं है। कोई भी वह कलीसिया जिसके साथ उसके समर्थन में सरकार है; और जिसकी अपनी वह निज शिक्षा है जो कि वचन में बिलकुल भी नहीं है, और जिसके पास वह साक्षात प्रकट सेवकाई नहीं है कि शैतान भड़क उठे, वह निश्चित रूप से आगे बढ़ती रह सकती है। यह कोई मापदण्ड नहीं था। लेकिन जब आप उस छोटे झुण्ड़ के विषय में सोचते हैं, जिसके सदस्यों को आरे से चीर डाला गया; शेरों को खिला दिया गया, सताया गया, और फांसी से लटका दिया गया; और फिर भी वे वचन के प्रति सच्चे बने रहे-अब निश्चित रूप से वह परमेश्वर की ही रही है। कैसे उन्होंने अपने विश्वास की लड़ाई को जयवन्त रखा, और उसे आज तक लेकर चलते रहे हैं। **वह** एक आश्चर्य ही है।

और यह तसल्ली की बात ना केवल सात कलीसियायी कालों के सुसमाचारदूतों के लिए ही है। हर एक सच्चा विश्वासी परमेश्वर के हाथ में है, और उससे उसका प्रेम और सामर्थ तथा उन सब लाभों को पूरी तरह से पा सकते हैं जो परमेश्वर विश्वासी को प्रदान करता है। परमेश्वर जो कुछ भी सुसमाचार-दूत को देता है; और वह सुसमाचारदूत को कैसे आशीषित करता है; यह उन **सब** विश्वासियों के लिए जो उसकी देह के सदस्य हैं, उसकी भलाई और देखभाल का एक उदाहरण है। आमीन!

6. दोधारी तलवार

"और उसके मुख से चोखी दोधारी तलवार निकलती थी।" इब्रानियों 4:12 *में लिखा है, "परमेश्वर का वचन जीवित और प्रबल और हर एक दोधारी तलवार से भी चोखा है, और प्राण और आत्मा*

10 www.messagehub.info

3. पाँव पीतल के समान

"और उसके पाँव उत्तम पीतल के समान थे जो मानो भट्टी में तपाये गये हों।" पीतल अपनी विशिष्ट कठोरता के लिये जाना जाता है। ऐसा कुछ भी ज्ञात नहीं है जिसे आप उसमें मिलाकर कोमल कर सकें। परन्तु यह पीतल जो उसके पाँव का वर्णन करता है और भी असाधारण है, क्योंकि उसे अभी भी उस अवस्था में धधकते भट्टे के परीक्षण का सामना करना है, उस परीक्षा में से होकर गुजरना है जिससे होकर कभी कोई नहीं गुजरा है। और यह बिलकुल ठीक बात है। और पीतल दिव्य न्याय को दर्शाता है: यह उस न्याय को दर्शाता है जिसकी परमेश्वर आज्ञा देता है और जिसे परमेश्वर ही घटित करता है। यूहन्ना 3:14-19,

"और जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाये।

ताकि जो कोई विश्वास करे नाश न हो पर अनन्त जीवन पाये।

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उसपर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाये।

परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इस लिए नहीं भेजा, कि जगत पर दंड़ की आज्ञा दे; परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाये।

जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दंड़ की आज्ञा नहीं होती है; परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिए कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र पर विश्वास नहीं किया।

और दंड़ का कारण यह है कि ज्योति जगत में आयी, और मनुष्यों ने अंधकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना, क्योंकि उन के काम बुरे थे।"

गिनती 21:8,9,

"यहोवा ने मूसा से कहा, एक तेज विषवाले सांप की प्रतिमा बनवाकर खम्भे पर लटका, तब जो सांप से डसा हुआ उसको देख ले, वह जीवित बच जायेगा।

सो मूसा ने एक पीतल का सांप बनवाकर खम्भे पर लटकाया, तब सांप के डसो हुओं में से जिस जिस ने उस पीतल के सांप की

यीशु मसीह की सात गुना महिमा 15

और प्रेम, धीरज, नम्रता, संयम, सज्जनता, वफादारी को दर्शाया और परमेश्वर ने चिन्ह और चमत्कारों और आश्चर्यक्रमों के द्वारा उनका समर्थन किया। उन पर हठधर्मी और पवित्र पाखंडी होने का आरोप लगाया गया। उन्हें संस्थाओं से बाहर निकाल दिया गया; और वे हंसी-ठट्ठा में उड़ाये जाने के बाद भी अड़िग बने रहें; लेकिन ये वचन के प्रति सच्चे बने रहे।

अब एक धार्मिक मत-सिद्धांत के लिये खड़े रहना और उसके प्रति सच्चा बना रहना कठिन नहीं होता है। ऐसा करना आसान होता है; क्योंकि शैतान इस सब के ठीक समर्थन में होता है। परन्तु परमेश्वर के वचन के प्रति सच्चे बने रहने और उसके पीछे चलने के विषय में कुछ और ही बात होती है, जो वचन ने पिन्तेकुस्त के उपरान्त मूल रूप से पैदा किया था।

अधिक समय नहीं हुआ है, कि एक व्यक्ति ने मुझ से कहा था, कि रोमन कैथोलिक कलीसिया ही सच्ची कलीसिया होनी चाहिये जैसाकि वह उसके प्रति सच्ची बनी रही है जिसका उसने सभी वर्षों में विश्वास किया है; और वह उसी पर ही बढ़ती चली जा रही है, और वह बदल नहीं रही है। वह ऐसी बिलकुल भी नहीं है। कोई भी वह कलीसिया जिसके साथ उसके समर्थन में सरकार है; और जिसकी अपनी वह निज शिक्षा है जो कि वचन में बिलकुल भी नहीं है, और जिसके पास वह साक्षात प्रकट सेवकाई नहीं है कि शैतान भड़क उठे, वह निश्चित रूप से आगे बढ़ती रह सकती है। यह कोई मापदण्ड नहीं था। लेकिन जब आप उस छोटे झुण्ड़ के विषय में सोचते हैं, जिसके सदस्यों को आरे से चीर डाला गया; शेरों को खिला दिया गया, सताया गया, और फांसी से लटका दिया गया; और फिर भी वे वचन के प्रति सच्चे बने रहे-अब निश्चित रूप से वह परमेश्वर की ही रही है। कैसे उन्होंने अपने विश्वास की लड़ाई को जयवन्त रखा, और उसे आज तक लेकर चलते रहे हैं। **वह** एक आश्चर्य ही है।

और यह तसल्ली की बात ना केवल सात कलीसियायी कालों के सुसमाचारदूतों के लिए ही है। हर एक सच्चा विश्वासी परमेश्वर के हाथ में है, और उससे उसका प्रेम और सामर्थ तथा उन सब लाभों को पूरी तरह से पा सकते हैं जो परमेश्वर विश्वासी को प्रदान करता है। परमेश्वर जो कुछ भी सुसमाचार-दूत को देता है; और वह सुसमाचारदूत को कैसे आशीषित करता है; यह उन **सब** विश्वासियों के लिए जो उसकी देह के सदस्य हैं, उसकी भलाई और देखभाल का एक उदाहरण है। आमीन!

6. दोधारी तलवार

"और उसके मुख से चोखी दोधारी तलवार निकलती थी।" इब्रानियों 4:12 *में लिखा है, "परमेश्वर का वचन जीवित और प्रबल और हर एक दोधारी तलवार से भी चोखा है, और प्राण और आत्मा*

अधिक धन्यवादित होना चाहिये। और किसी दिन हम ठीक उसी मधुर स्वर को बोलते हुए सुनेंगे, न्याय पर नहीं; वरन हम तो इसे उनके स्वागत में सुनेंगे जिनके पाप उसके लोहू से मिट चुके हैं, जिनके जीवन आत्मा से भर चुके हैं, और जिनका चलना-फिरना वचन के अन्दर ही था। इससे बढ़कर और क्या मूल्यवान हो सकता है, कि उस बड़ी भीड़ का स्वागत शब्द सुना जाये और उस बड़ी भीड़ से घिर जाया जाये जिन्होंने अनन्त जीवन के होने का विश्वास किया है? ओह, उस जैसा तो कुछ भी नहीं है। मैं प्रार्थना करता हूँ, कि आप उस शब्द को सुनेंगे, और अपना हृदय कठोर नहीं करेंगे, वरन उसे अपने राजा के रूप में ग्रहण करेंगे।

ओह, काश आप बस इसे देख लें। यह जल ही था जिसने जगत का नाश किया था; परन्तु यह ठीक वही जल ही था जिसने नूह को और नूह के लिये सम्पूर्ण पृथ्वी को बचाया था। उसके शब्द पर, उसके दास-सेवकों के शब्द पर कान लगायें, जबकि यह प्रायश्चित करने के लिए और जीवन के लिए बुलाता है।

5. उसके दाहिने हाथ में सात तारे थे:

"और वह अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिये हुए था।"अब हम वास्तव में बीसवें पद के द्वारा पहले से ही जानते हैं, कि ये सात तारे सचमुच में क्या हैं? "और उन सात तारों का भेद यह है कि वे सात कलीसियायी कालों के लिए दूत (सुसमाचारदूत या सन्देशवाहक) हैं।" जैसाकि वह इसका हमारे लिए भेद बताता है, अब हम यहाँ पर किसी भी तरह की भूल चूक नहीं कर सकते हैं। ये तारे तो सात सिलसिलेवार कलीसियायी कालों के सुसमाचारदूत हैं। उनका नाम तो नहीं दिया गया है। बस बताया गया है कि वे सात हैं, और प्रत्येक काल के लिए एक है। इफिसुस काल से लेकर इस लौदीकियायी काल तक प्रत्येक सुसमाचारदूत लोगों के लिये सत्य का सुसमाचार (सन्देश) लेकर आया; और उसने उस सुनिश्चित कलीसियायी काल के लिये परमेश्वर के वचन का पालन करने में कदापि कोई चूक नहीं की। प्रत्येक उसी को थामें रहा था। वे मूल उजियाले को ही थामे रहने में सत्यनिष्ठ बने रहे थे। जैसा कि हर एक काल परमेश्वर से दूर हट गया था, उसके वफादार सुसमाचारदूत ने ही उस काल को वापस वचन की ओर फेरा। उनकी सामर्थ प्रभु की ओर से ही थी, अन्यथा वे उस ज्वार-भाटा को कभी नही रोक सकते थे। वे उसके संरक्षण में सुरक्षित थे; क्योंकि कोई भी उन्हें उसके हाथ से छीन नहीं सकता था; और नहीं ही कोई भी उन्हें परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकता था; चाहे यह बीमारी, संकट, नंगापन, अकाल, तलवार, जीवन, या मृत्यु ही क्यों न हो। वे सचमुच उसी को ही समर्पित थे, और उसकी सर्वसामर्थ में कायम रहे थे। वे उस सताये जाने पर ध्यान नहीं देते थे जो उनकी राह में आया। उन्हें पीड़ा कष्ट, और उपहास तो उठाना पड़ा, लेकिन परमेश्वर को महिमा देने की खातिर उन्होंने अपने आप को उसकी खातिर दुख उठाने के योग्य समझा। और वे उसके उद्धार के लिए धन्यवाद से भरे रहकर उसके जीवन की ज्योति से दहके ;

ओर देखा वह जीवित बच गया।"

इस्राएल ने पाप किया था। पाप का न्याय तो होना ही था। अतः परमेश्वर ने मूसा को एक खम्भे पर पीतल का सांप लटकाने की आज्ञा दी थी, और जो भी उस पर दृष्टि करता था वह अपने पाप के हरजाने से बच जाता था।

खम्भे पर लटका वह पीतल का सांप अदन की वाटिका से ही चले आ रहे पाप को प्रतीकात्मक रूप में दर्शाता था; जहाँ सर्प ने हव्वा को पर-गंदा था और उससे पाप करवाया था। पीतल न्याय के विषय में बताता है, जैसे पीतल की वेदी देखी जाती है, जहाँ वेदी पर पाप का हरजाना एक बलिदान (चढ़ावे) के रूप में चढ़ाया जाता था। जब परमेश्वर ने एलिय्याह के दिनों में इस्राएल के पाप का न्याय किया था, तो उसने बारिश को रोके रखा था और ज्वलन्त आकाश पीतल के जैसा हो जाता है। अब हम इन विवरणात्मक उदहारण में देखते हैं, कि खम्भे के ऊपर सांप यही दर्शाता था कि पाप का पहले ही से न्याय हो चुका; क्योंकि वह पीतल का बना हुआ था, वह उस दिव्य न्याय को ही दिखा रहा था जो पहले से ही पाप के ऊपर पड़ चुका था। तब जो भी खम्भे पर लटके सांप पर दृष्टि करता था, वह उसकी महत्ता को ग्रहण कर रहा होता था, और वह चंगा कर दिया जाता था; क्योंकि यह परमेश्वर का कार्य या परमेश्वर का उद्धार ही था।

खम्भे पर लटका सांप उस कार्य की एक प्रतिछाया थी जिसे यीशु ने पृथ्वी पर आकर पूरा किया। वह इसलिए देहधारी हुआ, ताकि पाप के लिए परमेश्वर के न्यायों को स्वयं अपने ऊपर ले सके। बलि की वेदी ठोस पीतल की थी जो उस मेमने का प्रतिचित्रण कर रही थी, जो जगत की नेंव रखे जाने से भी पहले ही वध किया गया था। न्याय तो उस पर पहले ही आ गुजर चुका था, जबकि अभी तो कोई पापी भी नहीं था। चूंकि उद्धार का कार्य पूरी तरह से परमेश्वर का ही है; अतः उसने अकेले ही परमेश्वर के क्रोध की जलजलाहट के बड़े रस के कुण्ड़ में दाख को रौंदा। उसके वस्त्र उसके अपने ही निज लोहू से ही लाल हो गये थे। परमेश्वर के पक्षपातविहीन न्याय और प्रकोप की धधकती जलजलाहट उसका भाग हुई। उसने अन्यायी के लिए न्याय सहा

"हे परमेश्वर के मेमने, तू ही सामर्थी और जयवन्त और योग्य है,
क्योंकि तू ने अपने लोहू से हमारा उद्धार किया है।"

"वह हमारे ही अपराधों के कारण ही घायल किया गया, वह हमारे ही अधर्म के कामों हेतु कुचला गया, हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी और उसके कोड़े खाने से हम चंगें हो गये थे।" प्रभु ने ही हम सभों का अधर्म उस पर लाद दिया था। उसने ऐसा दुख कष्ट सहा जैसा कभी किसी मनुष्य ने नहीं सहा था। यहाँ तक कि क्रूस पर चढ़ाये जाने से पहले ही उसका पसीना बड़ी बड़ी बूंदों के रूप में उसके शरीर से लोहू के समान बहा, क्योंकि उस प्रचण्ड़ कष्ट व पीड़ा के

14 www.messagehub.info
अधिक धन्यवादित होना चाहिये। और किसी दिन हम ठीक उसी मधुर स्वर को बोलते हुए सुनेंगे, न्याय पर नहीं; वरन हम तो इसे उनके स्वागत में सुनेंगे जिनके पाप उसके लोहू से मिट चुके हैं, जिनके जीवन आत्मा से भर चुके हैं, और जिनका चलना-फिरना वचन के अन्दर ही था। इससे बढ़कर और क्या मूल्यवान हो सकता है, कि उस बड़ी भीड़ का स्वागत शब्द सुना जाये और उस बड़ी भीड़ से घिर जाया जाये जिन्होंने अनन्त जीवन के होने का विश्वास किया है? ओह, उस जैसा तो कुछ भी नहीं है। मैं प्रार्थना करता हूँ, कि आप उस शब्द को सुनेंगे, और अपना हृदय कठोर नहीं करेंगे, वरन उसे अपने राजा के रूप में ग्रहण करेंगे।
ओह, काश आप बस इसे देख लें। यह जल ही था जिसने जगत का नाश किया था; परन्तु यह ठीक वही जल ही था जिसने नूह को और नूह के लिये सम्पूर्ण पृथ्वी को बचाया था। उसके शब्द पर, उसके दास-सेवकों के शब्द पर कान लगायें, जबकि यह प्रायश्चित करने के लिए और जीवन के लिए बुलाता है।
5. उसके दाहिने हाथ में सात तारे थे:
"और वह अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिये हुए था।"अब हम वास्तव में बीसवें पद के द्वारा पहले से ही जानते हैं, कि ये सात तारे सचमुच में क्या हैं? "और उन सात तारों का भेद यह है कि वे सात कलीसियायी कालों के लिए दूत (सुसमाचारदूत या सन्देशवाहक) हैं।" जैसाकि वह इसका हमारे लिए भेद बताता है, अब हम यहाँ पर किसी भी तरह की भूल चूक नहीं कर सकते हैं। ये तारे तो सात सिलसिलेवार कलीसियायी कालों के सुसमाचारदूत हैं। उनका नाम तो नहीं दिया गया है। बस बताया गया है कि वे सात हैं, और प्रत्येक काल के लिए एक है। इफिसुस काल से लेकर इस लौदीकियायी काल तक प्रत्येक सुसमाचारदूत लोगों के लिये सत्य का सुसमाचार (सन्देश) लेकर आया; और उसने उस सुनिश्चित कलीसियायी काल के लिये परमेश्वर के वचन का पालन करने में कदापि कोई चूक नहीं की। प्रत्येक उसी को थामें रहा था। वे मूल उजियाले को ही थामे रहने में सत्यनिष्ठ बने रहे थे। जैसा कि हर एक काल परमेश्वर से दूर हट गया था, उसके वफादार सुसमाचारदूत ने ही उस काल को वापस वचन की ओर फेरा। उनकी सामर्थ प्रभु की ओर से ही थी, अन्यथा वे उस ज्वार-भाटा को कभी नही रोक सकते थे। वे उसके संरक्षण में सुरक्षित थे; क्योंकि कोई भी उन्हें उसके हाथ से छीन नहीं सकता था; और नहीं ही कोई भी उन्हें परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकता था; चाहे यह बीमारी, संकट, नंगापन, अकाल, तलवार, जीवन, या मृत्यु ही क्यों न हो। वे सचमुच उसी को ही समर्पित थे, और उसकी सर्वसामर्थ में कायम रहे थे। वे उस सताये जाने पर ध्यान नहीं देते थे जो उनकी राह में आया। उन्हें पीड़ा कष्ट, और उपहास तो उठाना पड़ा, लेकिन परमेश्वर को महिमा देने की खातिर उन्होंने अपने आप को उसकी खातिर दुख उठाने के योग्य समझा। और वे उसके उद्धार के लिए धन्यवाद से भरे रहकर उसके जीवन की ज्योति से दहके ;
यीशु मसीह की सात गुना महिमा 11
ओर देखा वह जीवित बच गया।"
इस्राएल ने पाप किया था। पाप का न्याय तो होना ही था। अतः परमेश्वर ने मूसा को एक खम्भे पर पीतल का सांप लटकाने की आज्ञा दी थी, और जो भी उस पर दृष्टि करता था वह अपने पाप के हरजाने से बच जाता था।
खम्भे पर लटका वह पीतल का सांप अदन की वाटिका से ही चले आ रहे पाप को प्रतीकात्मक रूप में दर्शाता था; जहाँ सर्प ने हव्वा को पर-गंदा था और उससे पाप करवाया था। पीतल न्याय के विषय में बताता है, जैसे पीतल की वेदी देखी जाती है, जहाँ वेदी पर पाप का हरजाना एक बलिदान (चढ़ावे) के रूप में चढ़ाया जाता था। जब परमेश्वर ने एलिय्याह के दिनों में इस्राएल के पाप का न्याय किया था, तो उसने बारिश को रोके रखा था और ज्वलन्त आकाश पीतल के जैसा हो जाता है। अब हम इन विवरणात्मक उदहारण में देखते हैं, कि खम्भे के ऊपर सांप यही दर्शाता था कि पाप का पहले ही से न्याय हो चुका; क्योंकि वह पीतल का बना हुआ था, वह उस दिव्य न्याय को ही दिखा रहा था जो पहले से ही पाप के ऊपर पड़ चुका था। तब जो भी खम्भे पर लटके सांप पर दृष्टि करता था, वह उसकी महत्ता को ग्रहण कर रहा होता था, और वह चंगा कर दिया जाता था; क्योंकि यह परमेश्वर का कार्य या परमेश्वर का उद्धार ही था।
खम्भे पर लटका सांप उस कार्य की एक प्रतिछाया थी जिसे यीशु ने पृथ्वी पर आकर पूरा किया। वह इसलिए देहधारी हुआ, ताकि पाप के लिए परमेश्वर के न्यायों को स्वयं अपने ऊपर ले सके। बलि की वेदी ठोस पीतल की थी जो उस मेमने का प्रतिचित्रण कर रही थी, जो जगत की नेंव रखे जाने से भी पहले ही वध किया गया था। न्याय तो उस पर पहले ही आ गुजर चुका था, जबकि अभी तो कोई पापी भी नहीं था। चूंकि उद्धार का कार्य पूरी तरह से परमेश्वर का ही है; अतः उसने अकेले ही परमेश्वर के क्रोध की जलजलाहट के बड़े रस के कुण्ड़ में दाख को रौंदा। उसके वस्त्र उसके अपने ही निज लोहू से ही लाल हो गये थे। परमेश्वर के पक्षपातविहीन न्याय और प्रकोप की धधकती जलजलाहट उसका भाग हुई। उसने अन्यायी के लिए न्याय सहा
"हे परमेश्वर के मेमने, तू ही सामर्थी और जयवन्त और योग्य है,
क्योंकि तू ने अपने लोहू से हमारा उद्धार किया है।"
"वह हमारे ही अपराधों के कारण ही घायल किया गया, वह हमारे ही अधर्म के कामों हेतु कुचला गया, हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी और उसके कोड़े खाने से हम चंगें हो गये थे।" प्रभु ने ही हम सभों का अधर्म उस पर लाद दिया था। उसने ऐसा दुख कष्ट सहा जैसा कभी किसी मनुष्य ने नहीं सहा था। यहाँ तक कि क्रूस पर चढ़ाये जाने से पहले ही उसका पसीना बड़ी बड़ी बूंदों के रूप में उसके शरीर से लोहू के समान बहा, क्योंकि उस प्रचण्ड़ कष्ट व पीड़ा के

कारण जो उसके लिए आगे ठहरायी हुई थी, उसका लोहू उसकी नसों में ही टूट गया था। लूका 22:24,

"और वह अत्यंत संकट में व्याकुल होकर और भी हृदय की वेदना से प्रार्थना करने लगा; और उसका पसीना मानो लोहू की बड़ी बड़ी बूँदों का नाई भूमि पर गिर रहा था।"

परन्तु किसी दिन वे पीतल के पांव पृथ्वी पर खड़े होगें और वही सारी पृथ्वी का महा न्यायी होगा; और वह बिना पक्षपात के सिद्धता से मानव जाति का न्याय करेगा। और उस न्याय से कोई बच नहीं पायेगा। उस न्याय को टाला नहीं जायेगा। उसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। वह जो अन्यायी है वह अभी भी अन्यायी ही बना रहेगा; वह जो मलिन है वह अभी भी मलिन ही बना रहेगा। ना बदलनेवाला तब बदलेगा नहीं; क्योंकि वह ना तो कभी बदला है और ना ही कभी बदलेगा। पीतल के वे पांव बैरी को कुचल डालेगें। वे उस मसीह विरोधी का, और उस पशु का और उसकी मूरत का, और उस सब का जो उसकी दृष्टि में दुष्ट हैं, सर्वनाश कर डालेगा। वह कलीसियायी तन्त्रों का जिन्होंने उसका नाम केवल उसकी चमक को बिगाड़ने के लिये ही लिया है, सर्वनाश कर डालेगा और उनको मसीह विरोधी के साथ ही कुचल डालेगा। सारे के सारे दुष्ट, नास्तिक, आधुनिकवादी, अज्ञेयवादी, स्वतन्त्रवादी वहाँ पर होगें। मत्यु, अधोलोक और कब्र वहाँ पर होंगे। हाँ, वे वहाँ होंगे। क्योंकि जब वह आता है, तो पुस्तकें खुलीं जाती हैं। यह तब होता है जब गुनगुनी कलीसिया और पाँच मूर्ख कुवारियाँ आयेंगी। वह भेड़ों को बकरियों से अलग करेगा। जब वह आता है, तो वह राज्य को अपने अधिकार में ले लेगा; क्योंकि यह उसी का ही है; और उसके साथ हजारों हजार होंगे, अर्थात् उसके साथ उसकी दुल्हन होगी; जो उसकी सेवा-टहल करने के लिए आती है। महिमा होवे! ओह, या तो इसे अभी कर लो, वरना कभी नहीं कर पाओगे। इससे पहले कि बहुत देर हो जाये प्रायश्चित कर डालो। मरे हुओं में से जाग जाओ और परमेश्वर की खोज करो, कि वह तुम्हें अपने आत्मा से भर डाले। अन्यथा तुम अनन्त जीवन से हाथ धो बैठोगे। अब जबकि समय है, तुम इसे कर डालो।

4. उसका शब्द बहुत जल के शब्द की तरह था

अब जल क्या दर्शाता है? इसे प्रकाशितवाक्य 17:15 में सुनिए,

"....जो पानी तू ने देखा.... वे लोग और भीड़ और जातियों और भाषा हैं।"

उसका शब्द भीड़ के शब्द के जैसा था। यह क्या है? यह न्याय ही है। क्योंकि यह उस गवाही की भीड़ का शब्द है जिन्होंने सभी युगों के दौरान पवित्र आत्मा के द्वारा मसीह की ही गवाही दी, और उसके सुसमाचार का प्रचार किया।

यह उस प्रत्येक जन का शब्द होगा, जो न्याय पर उस पापी के खिलाफ उठ खड़ा हो रहा होगा जिसने चेतावनी को ग्रहण नहीं किया था। तब सात सुसमाचार दूतों का शब्द ऊँचा और साफ साफ सुनायी देगा। वे विश्वसनीय प्रचारक जिन्होंने यीशु की उद्धार करनेवाली सामर्थ का प्रचार किया, जिन्होंने यीशु के नाम के बपतिस्मे का प्रचार किया, जिन्होंने पवित्र आत्मा से भर जाने और पवित्र आत्मा की सामर्थ का प्रचार किया; जो अपनो जीवनों से कहीं अधिक बढ़कर वचन के लिए अड़िग खड़े रहे, वे सभी यीशु मसीह का ही शब्द था, जो सभी कालों के दौरान पवित्र आत्मा के द्वारा ही पुकारता रहा। यूहन्ना 17:20,

"मैं केवल इन्हीं के लिए विनती नहीं करता हूँ, परन्तु उनके लिए भी जो उनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे।"

क्या आप ने कभी सोचा है कि, यह उस मनुष्य के लिए क्या ही भंयकर बात होती है जो धीरे धीरे उस झरने की तरफ निसहाय बहता चला जा रहा है जो ऊँचाई से नीचे गिरता है? अब उस गड़गड़ाहट के विषय में सोचिए, जबकि वह उसे सुन रहा होता है; जब वह अपने निश्चित और पक्के नाश पर आ पहुँचता है। और बिलकुल ठीक इसी प्रकार से ही न्याय का दिन होने जा रहा है जब भीड़ के शब्द की चिल्लाहट आपको इस बात के लिए दोषी ठहराती है, कि आपने उसपर कोई ध्यान नहीं दिया इससे पहले कि बहुत देर ना हो गयी। ठीक इसी घड़ी ही ध्यान दें। क्योंकि ठीक इसी समय भी स्वर्ग में आप के विचारों का लेखा-जोखा (रिकॉर्ड) रखा जा रहा है। वहाँ पर आपके विचार आप के शब्दों से कहीं ऊँचा बोलते हैं। बिलकुल ठीक उस फरीसी की तरह जो अपने मुँह से बहुत सी बातों का दावा तो करता था, लेकिन वह प्रभु की बात पर कान नहीं लगा रहा था, और उसका हृदय इतना अधिक भ्रष्ट और बुरा हो गया था, जबतक कि बहुत देर न हो गयी थी; यहाँ तक कि यह हो सकता है, कि अब यह आपके लिए वचन को सुनने और इस अनन्त जीवन को ग्रहण करने के लिए अन्तिम बुलाहट हो। और जब आप अनेकों शब्द की चिल्लाहट के न्याय और नाश के समक्ष पहुँचें, तब तक तो बहुत देर हो चुकेगी।

परन्तु क्या कभी आपने ध्यान दिया है, कि जल की ध्वनि कितनी मधुर और विश्रामकारी हो सकती है? मुझे मछली का शिकार करना अच्छा लगता है, और मैं एक ऐसा स्थान ढूंढ निकालना चाहता होता हूँ जहाँ पानी कलकल और छलछल की फुसफुसाहट कर रहा होता है। मैं तो बस अपनी पीठ के बल लेट सकता हूँ, और उसके द्वारा अपने हृदय में शान्ति और आनन्द का बखान करते हुए सुनता हूँ, और अपने हृदय में सन्तोष का अनुभव करता हूँ। मैं विश्राम के उस आश्रय पर लंगर डाल कर कितना आनन्दित हूँ जहाँ प्रभु का शब्द शान्ति का वैसा ही वर्णन करता है, जैसा पृथक्करण करनेवाले जल के वचन ने बताया था। हमें उसके प्रेम और देखभाल और मार्गदर्शन और सुरक्षा के शब्द को सुनने के कारण कितना

12 www.messagehub.info

कारण जो उसके लिए आगे ठहरायी हुई थी, उसका लोहू उसकी नसों में ही टूट गया था। लूका 22:24,

"और वह अत्यंत संकट में व्याकुल होकर और भी हृदय की वेदना से प्रार्थना करने लगा; और उसका पसीना मानो लोहू की बड़ी बड़ी बूँदों का नाई भूमि पर गिर रहा था।"

परन्तु किसी दिन वे पीतल के पांव पृथ्वी पर खड़े होगें और वही सारी पृथ्वी का महा न्यायी होगा; और वह बिना पक्षपात के सिद्धता से मानव जाति का न्याय करेगा। और उस न्याय से कोई बच नहीं पायेगा। उस न्याय को टाला नहीं जायेगा। उसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। वह जो अन्यायी है वह अभी भी अन्यायी ही बना रहेगा; वह जो मलिन है वह अभी भी मलिन ही बना रहेगा। ना बदलनेवाला तब बदलेगा नहीं; क्योंकि वह ना तो कभी बदला है और ना ही कभी बदलेगा। पीतल के वे पांव बैरी को कुचल डालेगें। वे उस मसीह विरोधी का, और उस पशु का और उसकी मूरत का, और उस सब का जो उसकी दृष्टि में दुष्ट हैं, सर्वनाश कर डालेगा। वह कलीसियायी तन्त्रों का जिन्होंने उसका नाम केवल उसकी चमक को बिगाड़ने के लिये ही लिया है, सर्वनाश कर डालेगा और उनको मसीह विरोधी के साथ ही कुचल डालेगा। सारे के सारे दुष्ट, नास्तिक, आधुनिकवादी, अज्ञेयवादी, स्वतन्त्रवादी वहाँ पर होगें। मत्यु, अधोलोक और कब्र वहाँ पर होंगे। हाँ, वे वहाँ होंगे। क्योंकि जब वह आता है, तो पुस्तकें खुलीं जाती हैं। यह तब होता है जब गुनगुनी कलीसिया और पाँच मूर्ख कुवारियाँ आयेंगी। वह भेड़ों को बकरियों से अलग करेगा। जब वह आता है, तो वह राज्य को अपने अधिकार में ले लेगा; क्योंकि यह उसी का ही है; और उसके साथ हजारों हजार होंगे, अर्थात् उसके साथ उसकी दुल्हन होगी; जो उसकी सेवा-टहल करने के लिए आती है। महिमा होवे! ओह, या तो इसे अभी कर लो, वरना कभी नहीं कर पाओगे। इससे पहले कि बहुत देर हो जाये प्रायश्चित कर डालो। मरे हुओं में से जाग जाओ और परमेश्वर की खोज करो, कि वह तुम्हें अपने आत्मा से भर डाले। अन्यथा तुम अनन्त जीवन से हाथ धो बैठोगे। अब जबकि समय है, तुम इसे कर डालो।

4. उसका शब्द बहुत जल के शब्द की तरह था

अब जल क्या दर्शाता है? इसे प्रकाशितवाक्य 17:15 में सुनिए,

"....जो पानी तू ने देखा.... वे लोग और भीड़ और जातियों और भाषा हैं।"

उसका शब्द भीड़ के शब्द के जैसा था। यह क्या है? यह न्याय ही है। क्योंकि यह उस गवाही की भीड़ का शब्द है जिन्होंने सभी युगों के दौरान पवित्र आत्मा के द्वारा मसीह की ही गवाही दी, और उसके सुसमाचार का प्रचार किया।

यीशु मसीह की सात गुना महिमा 13

यह उस प्रत्येक जन का शब्द होगा, जो न्याय पर उस पापी के खिलाफ उठ खड़ा हो रहा होगा जिसने चेतावनी को ग्रहण नहीं किया था। तब सात सुसमाचार दूतों का शब्द ऊँचा और साफ साफ सुनायी देगा। वे विश्वसनीय प्रचारक जिन्होंने यीशु की उद्धार करनेवाली सामर्थ का प्रचार किया, जिन्होंने यीशु के नाम के बपतिस्मे का प्रचार किया, जिन्होंने पवित्र आत्मा से भर जाने और पवित्र आत्मा की सामर्थ का प्रचार किया; जो अपनो जीवनों से कहीं अधिक बढ़कर वचन के लिए अड़िग खड़े रहे, वे सभी यीशु मसीह का ही शब्द था, जो सभी कालों के दौरान पवित्र आत्मा के द्वारा ही पुकारता रहा। यूहन्ना 17:20,

"मैं केवल इन्हीं के लिए विनती नहीं करता हूँ, परन्तु उनके लिए भी जो उनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे।"

क्या आप ने कभी सोचा है कि, यह उस मनुष्य के लिए क्या ही भंयकर बात होती है जो धीरे धीरे उस झरने की तरफ निसहाय बहता चला जा रहा है जो ऊँचाई से नीचे गिरता है? अब उस गड़गड़ाहट के विषय में सोचिए, जबकि वह उसे सुन रहा होता है; जब वह अपने निश्चित और पक्के नाश पर आ पहुँचता है। और बिलकुल ठीक इसी प्रकार से ही न्याय का दिन होने जा रहा है जब भीड़ के शब्द की चिल्लाहट आपको इस बात के लिए दोषी ठहराती है, कि आपने उसपर कोई ध्यान नहीं दिया इससे पहले कि बहुत देर ना हो गयी। ठीक इसी घड़ी ही ध्यान दें। क्योंकि ठीक इसी समय भी स्वर्ग में आप के विचारों का लेखा-जोखा (रिकॉर्ड) रखा जा रहा है। वहाँ पर आपके विचार आप के शब्दों से कहीं ऊँचा बोलते हैं। बिलकुल ठीक उस फरीसी की तरह जो अपने मुँह से बहुत सी बातों का दावा तो करता था, लेकिन वह प्रभु की बात पर कान नहीं लगा रहा था, और उसका हृदय इतना अधिक भ्रष्ट और बुरा हो गया था, जबतक कि बहुत देर न हो गयी थी; यहाँ तक कि यह हो सकता है, कि अब यह आपके लिए वचन को सुनने और इस अनन्त जीवन को ग्रहण करने के लिए अन्तिम बुलाहट हो। और जब आप अनेकों शब्द की चिल्लाहट के न्याय और नाश के समक्ष पहुँचें, तब तक तो बहुत देर हो चुकेगी।

परन्तु क्या कभी आपने ध्यान दिया है, कि जल की ध्वनि कितनी मधुर और विश्रामकारी हो सकती है? मुझे मछली का शिकार करना अच्छा लगता है, और मैं एक ऐसा स्थान ढूंढ निकालना चाहता होता हूँ जहाँ पानी कलकल और छलछल की फुसफुसाहट कर रहा होता है। मैं तो बस अपनी पीठ के बल लेट सकता हूँ, और उसके द्वारा अपने हृदय में शान्ति और आनन्द का बखान करते हुए सुनता हूँ, और अपने हृदय में सन्तोष का अनुभव करता हूँ। मैं विश्राम के उस आश्रय पर लंगर डाल कर कितना आनन्दित हूँ जहाँ प्रभु का शब्द शान्ति का वैसा ही वर्णन करता है, जैसा पृथक्करण करनेवाले जल के वचन ने बताया था। हमें उसके प्रेम और देखभाल और मार्गदर्शन और सुरक्षा के शब्द को सुनने के कारण कितना